संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ अगस्त २०११
वर्ष : २१, अंक : २
(निरंतर अंक : २२४)

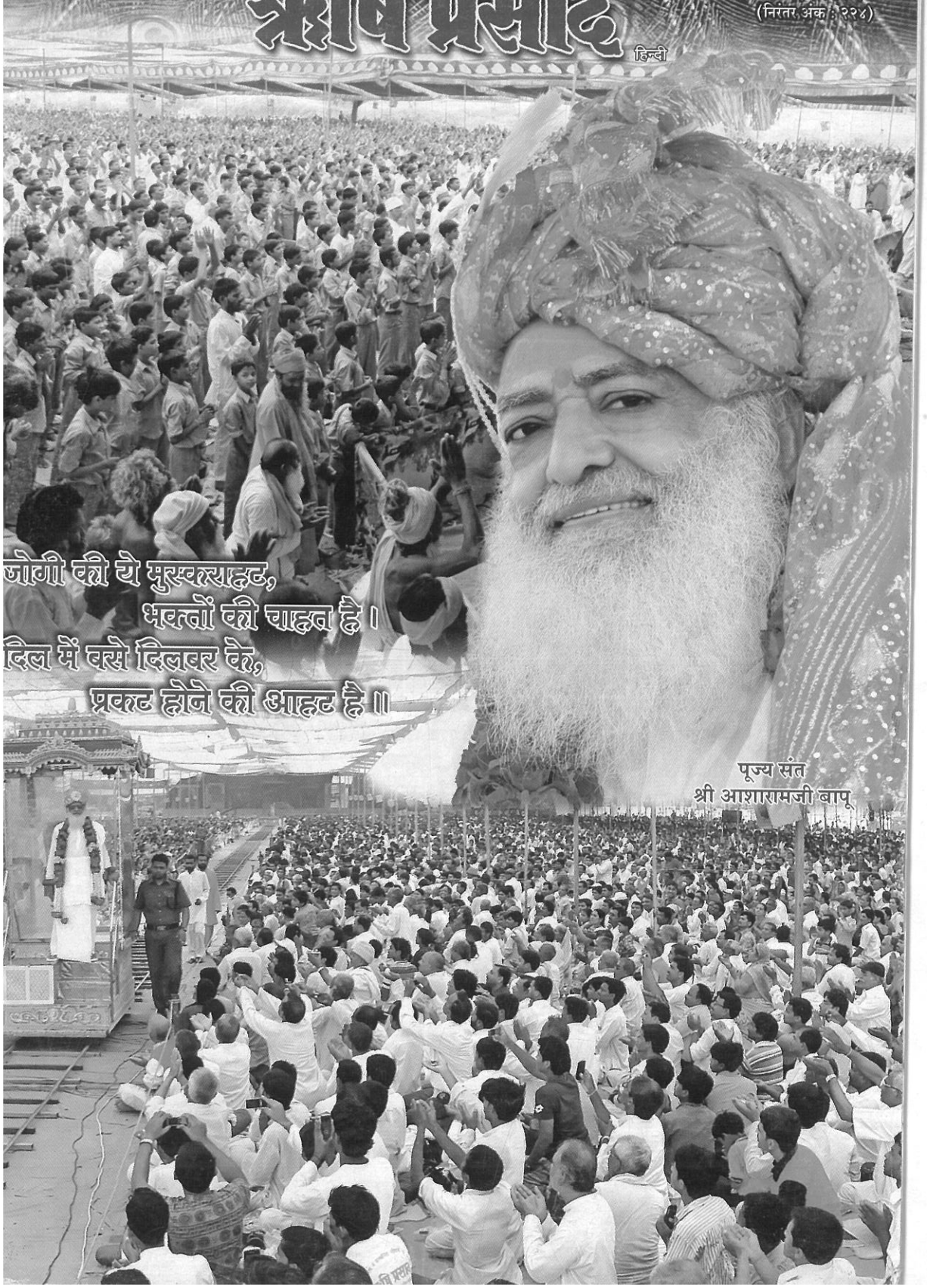

जोगी की ये मुस्कराहट,
भक्तों की चाहत है ।
दिल में बसे दिलबर के,
प्रकट होने की आहट है ॥

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

देश के १२ स्थानों पर मनाया गया 'गुरुपूर्णिमा-महोत्सव'

झलकियाँ आवरण पृष्ठ ३ व ४ पर भी।

रायपुर (छ.ग.)

पूज्य बापूजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए...

डॉ. रमण सिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री गोपाल कांडा
गृहमंत्री, हरियाणा

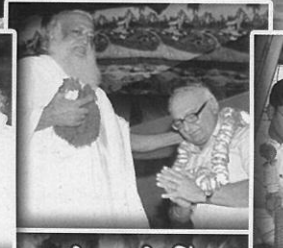

श्री परमवीर सिंह
कृषि मंत्री, हरियाणा

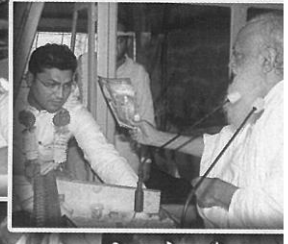

श्री अशोक तँवर
सांसद, सिरसा (हरि.)

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंग्ला भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २१ | अंक : ०२
भाषा : हिन्दी | (निरंतर अंक : २२४)
१ अगस्त २०११ | मूल्य : रु. ६-००
श्रावण-भाद्रपद | वि.सं. २०६८

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात).
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - ३८०००९ (गुजरात).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	रु. ६०/-	रु. ७०/-
द्विवार्षिक	रु. १००/-	रु. १३५/-
पंचवार्षिक	रु. २२५/-	रु. ३२५/-
आजीवन	रु. ५००/-	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	रु. ३००/-	US $ 20
द्विवार्षिक	रु. ६००/-	US $ 40
पंचवार्षिक	रु. १५००/-	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org
: www.rishiprasad.org

इस अंक में...

(१) गुरु संदेश ४
✻ अपनी समझ बढ़ाओ
(२) विचार मंथन ५
✻ खुशी का मूल किसमें ?
(३) प्रेरक प्रसंग ६
✻ यह तो गुरु का अधिकार है !
(४) पर्व मांगल्य ८
✻ जीवन में जगे माधुर्य श्रीकृष्ण का
(५) परिप्रश्नेन... १०
(६) आत्मस्वरूप की तीन विशेषताएँ १०
(७) गीता-अमृत ११
✻ बुद्धियोगमुपाश्रित्य...
(८) काव्य गुंजन ✻ गुरुदेव तेरी रहमत १३
(९) मन एक कल्पवृक्ष १४
✻ मनःस्थिति का परिमार्जन
(१०) संयम की शक्ति १५
✻ उपयुक्त आहार
(११) संत वाणी १६
✻ संसार मुसाफिरखाना
(१२) नैतिक शिक्षा १७
✻ महात्मा विदुर की जीवनोपयोगी बातें
(१३) मुक्ति मंथन १८
✻ दुःख व बंधन का कारण : वासना
(१४) साजिश का भंडाफोड़ २०
(१५) पर्व मांगल्य २२
✻ गुरु संकल्प को साकार करनेवाली : श्रावणी पूर्णिमा
(१६) गणेश चतुर्थी या कलंकी चौथ २३
(१७) एकादशी माहात्म्य २४
✻ अजा एकादशी ✻ पद्मा एकादशी
(१८) संत वाणी २६
(१९) अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करना जन्मसिद्ध अधिकार है ! २७
(२०) शरीर स्वास्थ्य ✻ शरद ऋतुचर्या ✻ स्वास्थ्य-रक्षक सरल प्रयोग २९
(२१) वर्ग पहेली ३०
(२२) भक्तों के अनुभव ✻ बड़दादा की कृपा से ब्लड कैंसर गायब ! ३१
(२३) संस्था समाचार ३१

विभिन्न टी.वी. चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS — रोज प्रातः ३, ५-३०, ७-३० बजे, रात्रि १० बजे तथा दोपहर २-४० (केवल मंगल, गुरु, शनि)	संस्कार — रोज दोपहर २-०० बजे	care WORLD — रोज सुबह ७-०० बजे	सत्संग टी.वी. — रोज रात्रि १०-०० बजे	Ashram TV LIVE — आश्रम इंटरनेट टी.वी. २४ घंटे प्रसारण

सजीव प्रसारण के समय नित्य के कार्यक्रम प्रसारित नहीं होते।

✻ A2Z चैनल रिलायंस के 'बिग टी.वी.' (चैनल नं. 425) तथा 'डिश टी.वी.' (चैनल नं. 579) पर भी उपलब्ध है।
✻ care WORLD चैनल 'डिश टी.वी.' पर उपलब्ध है। चैनल नं. 770
✻ इंटरनेट पर www.ashram.org/live लिंक पर आश्रम इंटरनेट टी.वी. उपलब्ध है।

Opinions expressed in this magazine are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

अपनी समझ बढ़ाओ

- पूज्यश्री

'यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है परंतु जो पुरुष केवल मुझको ही निरंतर भजते हैं, वे इस माया को उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं ।'

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

(गीता : ७.१४)

हे अर्जुन ! मुझ अंतर्यामी आत्मदेव की माया दुस्तर है, पर जो मेरे को प्रपन्न (शरणागत) होते हैं उनके लिए मेरी माया गोपद जैसी है, गाय के पग के खुर जैसी है । जिनको जगत सच्चा लगता है उनके लिए मेरी माया दुस्तर है ।

जय-विजय ने सनकादि ऋषियों का अपमान किया । उन सेवकों को सनकादि ऋषियों का शाप मिला । वे रावण और कुम्भकर्ण हुए । भगवान अंतर्यामी हैं तो भी क्या हो गया ! सेवकों के अपने कर्म, अपनी इच्छा, अपने प्रारब्ध हैं । कोई कहे, भगवान अंतर्यामी हैं तो यह क्यों होने दिया ? गुरु अंतर्यामी हैं तो यह क्यों होने दिया ? अरे, तेरी बुद्धि में खबर नहीं पड़ती भाई ! अंतर्यामी-अंतर्यामी मतलब क्या ? मतलब जगत के व्यवहार को जगत की रीति से नहीं चलने देना, इसका नाम अंतर्यामी है ? गुरु अंतर्यामी हैं तो ऐसा क्यों ? भगवान अंतर्यामी हैं तो ऐसा क्यों ?... ऐसे कुतर्क से पुण्याई और शांति सब खो जाती है ।

कबीरा निंदक ना मिलो पापी मिलो हजार ।
एक निंदक के माथे पर लाख पापिन को भार ॥

निंदक अपने दिमाग में कुतर्क भर के रखता है इसलिए उसकी शांति चली जाती है, उसका कर्मयोग भाग जाता है, भक्तियोग भाग जाता है और फिर खदबदाता रहता है ।

भगवान अंतर्यामी हैं तो ऐसा क्यों हुआ ? भगवान सर्वसमर्थ हैं और जिनके घर आनेवाले हैं ऐसे वसुदेव-देवकी को जेल भोगना पड़े, ऐसा क्यों ? पैर में जंजीरें, हाथ में जंजीरें ऐसा क्यों ? रामजी अंतर्यामी हैं तो मंथरा के भड़काने को तो जानते थे, मंथरा को पहले ही निकाल देते नौकरी से... कैकेयी को मंथरा के प्रभाव से बाहर कर देते... ! विधि की लीलाओं को समझने के लिए गहरी नजर चाहिए । तर्क-कुतर्क करना है तो कदम-कदम पर होगा लेकिन श्रद्धा की नजर से देखो तो यह भगवान की माया है । जो भगवान की शरण जाता है उसके लिए यह गोपद की नाईं नन्ही हो जाती है और जो तर्क की शरण जाता है उसके लिए माया विशाल, गम्भीर संसार-सागर हो जाती है । कई डूब जाते हैं उसमें ।

गुरु अंतर्यामी हैं तो हमारे से कभी-कभी ऐसा गुरुजी पूछते थे कि लगे कि हमारे गुरु अंतर्यामी हैं, कैसे ? लेकिन हमारे मन में ऐसा कभी नहीं आया । अंतर्यामी माने क्या ? जिन्होंने अंतरात्मा में विश्राम पाया है । जब मौज आयी तो अंतर्यामीपने की लीला कर देते हैं, नहीं आयी तो साधारण मनुष्य की नाईं जीने में उनको क्या घाटा है ! भगवान अंतर्यामी हैं फिर भी नारदजी से पूछते हैं । भगवान अंतर्यामी हैं फिर भी सीताजी के लिए दर-दर पूछते हैं तो उनकी ऐसी लीला है ! उनके अंतर्यामीपने की व्याख्या तुमको क्या पता चले ! पूरे ब्रह्माण्ड में चाहे उथल-पुथल हो जाय लेकिन व्यक्ति का मन न हिले ऐसी श्रद्धा हो, फिर साधक को कुछ नहीं करना पड़ता है । ❑

खुशी का मूल किसमें ?

- पूज्य बापूजी

शरणानंद महाराज भिक्षा के लिए किसी द्वार पर गये तो उस घर के लोगों को उन्होंने बड़ा खुश महसूस किया।

महाराज ने पूछा : ''अरे ! किस बात की खुशी है बेटे-बेटियाँ ?''

''महाराज ! क्या बतायें, आज तो बहुत मजा आ रहा है। बहुत खुशी हो रही है।''

शरणानंदजी : ''अरे भाई ! कुछ तो बताओ, आखिर बात क्या है ?''

''भैया बी.ए. में पास हो गया है, तार आया है, इसीलिए खुश हैं।''

सारे-के-सारे लोग खुश थे। लेकिन संत जब मिलते हैं और बात करते हैं तो आपकी खुशी स्थायी हो और खुशी के मूल में यात्रा हो, उस नजरिये से बात करते हैं। आप मौत के सिर पर पैर रखकर जीवनदाता को मिलो, उस नजरिये से आपके बीच आते हैं। सच्चे संतों को आपसे कुछ लेना नहीं है, आपको देना-ही-देना है।

शरणानंदजी : ''अभी जो आपको इतनी खुशी हो रही है, कल तक ऐसी-की-ऐसी खुशी आप टिका सकते हैं क्या ? अब वह नापास तो होगा नहीं ! पास है तो पास ही रहेगा। कल भी पास रहेगा, परसों भी पास ही रहेगा। लेकिन उसके पास होने की खुशी अभी जो हो रही है, वह कल भी ऐसी टिकेगी क्या ? सबकी इच्छा थी कि वह पास हो जाय और वह पास हो गया, तार आ गया। तुम्हारी इच्छा पूरी हो गयी। वह इच्छा निकल गयी उस बात की खुशी है। खुशी तो आत्मदेव की है !'' सब चुप हो गये।

''तुम्हारी इच्छा पूरी हुई उसकी खुशी है कि कोई और खुशी है ? तुम्हारी एक इच्छा निवृत्त हुई, उसका सुख है तुम्हें। भाई की सफलता की खुशी है कि आपकी इच्छा निवृत्त हुई उसकी खुशी है ?

अच्छा, कौन-सी श्रेणी से पास हुआ है ? प्रथम श्रेणी से पास हुआ है कि दूसरी, तीसरी श्रेणी से ? एम.ए. हो सकेगा ? नौकरी पा सकेगा ? अपने पैरों पर खड़ा रह सकेगा ?''

अब वे लोग चुप !

आपकी कोई मनचाही बात हो जाती है और आप जितने खुश होते हैं, वैसी खुशी दूसरे दिन तक रहती है क्या ? नहीं। आपकी मनचाही बात हुई तो इच्छा हट गयी। आप इच्छारहित पलों में आ गये। तुम्हारी वह इच्छारहित दशा ही अंदर का सुख लाती है। जिसकी एक इच्छा हट जाती है, वह इतना सुखी होता है तो जिसकी सारी इच्छाएँ हट गयीं, उसके सुख का क्या तुम वर्णन कर सकते हो ? एक इच्छा निवृत्त होने से लोग इतने खुश होते हैं तो जिनकी अपने सुख की सारी इच्छाएँ निवृत्त हो गयीं, उनके पास कितना सुख होगा ! उन महापुरुष ने सबको सात्त्विक बुद्धि में प्रवेश करने के लिए मजबूर कर दिया।

जिसकी सुखी होने की कामनाएँ मिट गयीं, वह कितना सुखी है ! जिसकी बाह्य सफलताओं की कामनाएँ मिट गयीं, वह कितना सफल है ! बाह्य आकर्षण के बिना ही वह स्वयं आकर्षण का केन्द्र बन गया। कितना सफल है ! इन्द्रदेव ऐसे महापुरुष का पूजन करके भाग्य बना लेते हैं। देवता ऐसे ब्रह्मज्ञानी का दीदार करके अपना पुण्य बढ़ा लेते हैं। ❑

यह तो गुरु का अधिकार है !

(ब्रह्मनिष्ठ पूज्य बापूजी की परम हितकारी अमृतवाणी)

एक बड़ा भारी पंडित था, वामन पंडित । वह दिग्विजय की मशाल लेकर घूमा । जो भी उससे शास्त्रार्थ करे, उसको परास्त कर देता । चलते-चलते थकान के कारण एक वृक्ष के नीचे बैठा । संध्या का समय था । उस वृक्ष पर ब्रह्मराक्षस रहता था । दूसरा ब्रह्मराक्षस बैठने को आया तो पहलेवाला बोला : ''ऐ ! हट जा, हट जा ।''

दूसरा बोला : ''बैठने की जगह तो है और तू भी ब्रह्मराक्षस, मैं भी ब्रह्मराक्षस, फिर मुझे क्यों हटाता है भैया ?''

''अरे, तेरे को पता नहीं है । यह पंडित मरकर इधर आयेगा, ब्रह्मराक्षस होकर यहाँ रहेगा । यह उसकी जगह है ।''

''क्यों ?''

''वह शास्त्रार्थ करके दूसरों को नीचा दिखाता है, अपने अहं को पोसता है । शास्त्र तो अच्छे हैं लेकिन उसने अहं पोसने का रास्ता अपनाया है । अहं पोसने के लिए जो धर्म का उपयोग करता है, वह ब्रह्मराक्षस होने के ही काबिल है न ! उसका स्थान यहीं है ।''

पंडित वृक्ष के नीचे संध्या कर रहा था । उसकी कुछ पुण्याई होगी, संध्या का कुछ प्रभाव होगा । इन दोनों का संवाद वामन पंडित ने सुन लिया । उसने सोचा, 'बाप रे ! मैं इतना बड़ा भारी पंडित, मेरे नाम से सारे विद्वान कन्नी काटते हैं, और मैं मरूँगा तो ब्रह्मराक्षस होऊँगा ! जिसको विद्या का गर्व होता है वही तो ब्रह्मराक्षस होता है ! क्या मेरा विद्या का गर्व मुझे ब्रह्मराक्षस की योनि में ले जायेगा !'

इसीलिए भक्तिमार्ग में 'मैं' को झुकाने के लिए पत्थर की मूर्ति के आगे भी लेटकर प्रणाम करना होता है । इस 'मैं' को ही मिटाने की यह व्यवस्था है, नहीं तो मूर्ति को तुम्हारे सिर झुकाने से क्या लेना है !

संध्याकाल में सुषुम्ना नाड़ी खुली रहती है । संध्याकाल कल्याणकारी कालों में से है । चार संध्याकाल होते हैं । सुबह सूर्योदय नहीं हुआ हो पर होनेवाला हो और चन्द्रमा दिखाई देने बंद हुए हों तब संधिकाल होता है, वह मंत्रसिद्धि का योग है । उस समय देवता तो सोते हैं, देवता माने इन्द्रियों का आकर्षण सोता है और मंत्र-देवता जाग्रत होते हैं । वह आपका शुभ संकल्प फलने की अवस्था होती है । दूसरा दोपहर को १२ बजने के कुछ मिनट पहले और कुछ मिनट बाद संधिकाल होता है । तीसरा सूर्य अस्ताचल को नहीं गये लेकिन सूर्य का प्रकाश दिन जैसा नहीं रहा, कुछ लालिमा रही । सूर्य जब विदा हो रहे हों वह संधिकाल है । चौथा रात्रि को १२ बजे का संधिकाल होता है । इन संधिकालों को चतुर्मास में जो सँभाल ले और ध्यान-भजन करे, उसके ध्यान-भजन में विशेष सफलता, बरकत आदि की सम्भावना है ।

अब उस पंडित के लिए चतुर्मास था कि कौन-सा मास था लेकिन पंडित की वह वेला धनभागी वेला थी । जिस वेला में किसीके निमित्त आदमी का अहंकार विसर्जित हो, ममता विसर्जित हो, भगवान की प्रीति जगे, भगवान की शरण जाय, वह धनभागी घड़ियाँ होती हैं ।

वामन पंडित ने सभी विजयपत्र फाड़ दिये, सारे शास्त्र वहीं विसर्जित कर दिये और हिमालय को चला गया । मैं वामन पंडित को खूब-खूब धन्यवाद दूँगा । ब्रह्मराक्षसों की बात सुनकर सर्वस्व त्यागने का कैसा सामर्थ्य था ! मनुष्य के पास यह बहुत बड़ी ईश्वरीय

देन है - सर्वत्याग का सामर्थ्य । मौत तो सर्वत्याग करा देगी, जीते-जी सर्वस्व-त्याग का सामर्थ्य बना रहे तो सर्व जिसका है, वह सर्वेश्वर आपका आत्मदेव है, वह प्रकट हो जायेगा ।

त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् । (गीता : १२.१२)

वामन पंडित ने वर्षों तपस्या की लेकिन भगवान प्रकट नहीं हुए और न तत्त्वरूप से ही अनुभव हुआ । तो उन्होंने सोचा कि 'इतना-इतना किया, कुछ नहीं हो रहा है तो अब जीकर क्या करेंगे ! इस अहंकारी शरीर को जिलाकर क्या करना !' ऐसा सोचकर पहाड़ की चोटी पर चढ़े और 'जय श्रीहरि' करके नीचे कूदने को गये । हरि तो हरि हैं । मेरे गुरु भी हरि हैं, हरि गुरु हैं । **सर्वदेवमयो गुरुः ।** 'गु', 'र', 'उ'... 'गु' माने सिद्धिदायक बीज, 'रु' माने अज्ञान हटानेवाले, उर में प्रकट होनेवाले । भगवान का एक नाम 'गुरु' भी है । गुरु प्रकट हुए, हरि प्रकट हुए । हरि, गुरु - ये सब एक ही सद्वस्तु के भिन्न-भिन्न नाम हैं । ईश्वर तो अंतरात्मा है, बाहर प्रकट होकर हाथों में ले लिया और वामन पंडित को रोक दिया । अपना बायाँ हाथ सिर पर रखकर बोले : ''वामन पंडित ! तेरा मंगल हो ।''

''भगवान ! आप इतनी तपस्या और इतनी कसौटी के बाद मिले लेकिन फिर भी... शास्त्र ने तो कहा है कि दायाँ हाथ सिर पर रखते हैं, आपने बायाँ क्यों रखा ?''

''अरे वामन ! तू इतना विद्वान होकर यह नहीं जानता कि सिर पर दायाँ हाथ रखना गुरु का अधिकार है, भगवान का नहीं । जब तक सिर पर गुरु का दायाँ हाथ नहीं आता, तब तक यात्रा पूरी नहीं होती ।''

अब जरूरी नहीं है कि गुरु अपना दायाँ हाथ ऐसे ही रखें, मानसिक रूप से भी रख सकते हैं, दृष्टि से भी होता है, वह तो गुरु जानते हैं ।

''भगवान ! आपने गुरु के अधिकार की सुरक्षा करने के लिए मेरे सिर पर अपना दायाँ हाथ न रखकर बायाँ हाथ रखा ?''

''हाँ ।''

''तो क्या गुरु का अधिकार आपसे भी बड़ा है ?''

''बड़ा है, मैं अवतार लेकर भी गुरु के शरणागत होता हूँ । गुरु तो गुरु ही हैं । वामन पंडित ! जब तक गुरु का ज्ञान नहीं मिलता, तब तक मेरा मायावी रूप दिखता है । वह बुलाने पर प्रकट होता है और बाद में अंतर्धान हो जाता है । कभी किसी निमित्त प्रकट हुआ थोड़ी देर के लिए, फिर अदृश्य हो जाता है लेकिन गुरु तो... ।''

''दायाँ हाथ सिर पर रखनेवाले गुरु मुझे कहाँ मिलेंगे ?''

''वामन ! सज्जनगढ़ में मिलेंगे ।''

''अच्छा, समर्थ रामदास !''

प्रभु को प्रणाम किया । प्रभु तो अंतर्धान हो गये और ये भाईसाहब पहुँचे महाराष्ट्र के सज्जनगढ़ में । समर्थ रामदासजी की स्तुति की । रामदास प्रसन्न हुए । उन्होंने अपना दायाँ हाथ पीठ पर रखा और बोले : ''वाह-वाह ! आ गये, अपने घर आ गये, ठीक ! अपना अहंकार छोड़ने के लिए इतनी तपस्या की और भगवान ने तुम्हें दर्शन दिया, फिर इधर भेजा है, शाबाश !''

पंडित बोला : ''गुरुदेव ! आपने दायाँ हाथ तो रखा है लेकिन सिर पर क्यों नहीं रखते ?''

''अरे पगले ! सिर पर तो नारायण ने अपना बायाँ हाथ रख दिया न !''

''फिर आप दायाँ हाथ क्यों नहीं रखते ?''

''अरे, नारायण का बायाँ भी नारायण का है और दायाँ भी नारायण का है । जब नारायण ने रख दिया तो यहाँ भी तो नारायण है । सब नारायण-ही-नारायण है । नारायण में से समर्थ रामदास हैं ।'' दो वचन सुना दिये । वामन पंडित अहंकाररहित हो गये, आत्मजागृति हो गयी, ब्राह्मी स्थिति हो गयी । क्या महापुरुषों की कृपा और क्या सामर्थ्य है ! वामन पंडित गद्गद हो गये कि 'मेरे सारे शास्त्र और सारी तपस्या गुरुकृपा के आगे बहुत छोटी हो गयी ।' ❑

जीवन में जगे माधुर्य श्रीकृष्ण का

- पूज्य बापूजी

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : २२ अगस्त २०११)

जन्माष्टमी का उत्सव स्वार्थ में, शोषण में लगकर सुखी होने की कंस-परम्परा को चुनौती देने के लिए है । 'हम अधिक सत्तावान, अधिक बलवान, अधिक बुद्धिमान हैं तथा पाण्डव पाँच हैं और हम सौ हैं' - बाह्य उपलब्धि के इस अहंकार की परम्परा की पोल खोलने के लिए है । भक्तों की प्रीति का पान करने के लिए और **परस्परं भावयन्तु...** परस्पर उन्नति का प्रसाद बाँटने के लिए है । तुम देख सको, छू सको, नचा सको, बुला सको ऐसे प्रेमी, प्राणिमात्र के हितैषी परमात्मा का हमें दीदार करानेवाला अवतार कृष्ण-अवतार है ।

नंद घेर आनंद भयो...

नंद कौन हैं ? जीवात्मा नंद है और पवित्र बुद्धि यशोदा । उसके घर आनंद होता है । यशोदा क्या है ? जो हर परिस्थिति में परमात्मा को यश दे : 'वाह प्रभु ! सुख देकर तुमने उदारता का आनंद जगाया, सेवा का रस जगाया । वाह ! वाह !! संसार की आसक्ति मिटाने के लिए, विवेक जगाने के लिए तथा संयम सिखाने के लिए दुःख और विपरीत अवस्था आयी । तू कैसा है ! अमीर हो चाहे गरीब हो, पठित हो चाहे अपठित हो, बड़ा हो, छोटा हो, किसी भी मजहब का हो, सभीके जीवन में सुख-दुःख, लाभ-हानि, यश-अपयश की तानाबुनी करके अपने अमरत्व की तरफ लाता है । वाह प्रभु ! वाह !!' ऐसी बुद्धि का नाम है 'यशोदा' ।

ऐसी बुद्धि जिसके पास रहती है, ऐसे मनुष्य का नाम है 'नंद' । आनंद कैसे हुआ ?

हाथी दीन्हे, घोड़ा दीन्हे और दीन्हे पालकी ।
जय कन्हैयालाल की ॥...

ये प्रिय वस्तुएँ, जो क्रियाजन्य भोग की सामग्री हैं, वे तो लुटायीं और भाव की तथा ज्ञान की मस्ती, आनंद नंद के घर रहा ।

भगवान क्यों इतनी मुसीबतें मोल लेते हैं ? देवकी के गर्भ में आना, छाछ के लिए नाचना, कंस, धेनुकासुर, बकासुर की इतनी मुसीबतें झेलना !

पी.एम. भी गंदी बस्ती में नहीं जाते, सी.एम. को आदेश कर देते हैं । सी.एम. भी गंदी बस्तियों में और लुच्चे-लफंगों के बीच नहीं जाते हैं, डी.जी. को कह देते हैं । डी.जी. भी नहीं जाते हैं, आई.जी., डी.आई.जी. को बोल देते हैं । आई.जी., डी.आई.जी. भी नहीं जाते, पी.एस.आई. अथवा अन्य पुलिसवाले निपटा देते हैं । तो क्या भगवान को इतना ख्याल नहीं आया कि मुझे नहीं जाना चाहिए ! कैसे भगवान हैं हिन्दुओं के ! आये तो फिर क्या-क्या करते हैं, घोड़ागाड़ी चलाते हैं, द्रौपदी की जूतियाँ उठाते हैं, युधिष्ठिर और भीम आते हैं तो उठकर खड़े हो जाते हैं, ऐसा क्यों करते हैं ?

वे परात्पर ब्रह्म जब देवकी के गर्भ में आये तो ब्रह्मा, महेश, देवता, गंधर्व, किन्नर स्तुति करने आये । ब्रह्मा और शिवजी ने स्तुति की कि 'मन-इन्द्रियों से परे अंतर्यामी और सभीके अंतरात्मा, सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारण ऐसे आप आज यहाँ पधारे हैं । कंस, शिशुपाल जैसों को मारने के लिए ही नहीं, बल्कि भक्तों के ऊपर कृपा करने तथा प्रेमियों के प्रेम की अभिवृद्धि करने के लिए आप यह प्रेमावतार लेते रहे हैं ।'

भगवान कृष्ण पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में साधुओं की जूठी पत्तलें उठाते हैं, चरण धोते हैं ।

संध्या को जब युद्ध खत्म होता है तो अन्य लोग आराम करते हैं, संध्या करते हैं लेकिन श्रीकृष्ण घोड़ों के घावों पर मलहम लगाते हैं, मालिश करते हैं। इस तरह इलाज करते हैं कि घोड़े दूसरे दिन काम में आ जायें। चिकित्सक भी ऐसे हैं, कलाकार भी ऐसे हैं लेकिन इतना छोटा काम क्यों करते हैं ?

भगवान का आना और छोटा काम करना, इसीमें भगवान के बड़प्पन का दर्शन होता है, इसमें ही ईश्वर का ऐश्वर्य छलकता है। जो छोटा काम करने से कतराता है, उसका बड़प्पन लोक-आश्रित है। उसका बड़प्पन किसीका दिया हुआ है। भगवान का बड़प्पन लोक-आश्रित नहीं है, किसीका दिया हुआ नहीं है। प्रेमियों के प्रेम में भगवान बड़प्पन के भाव को सँभाले रखें, प्रेमस्वरूप भगवान की यह ताकत नहीं है। ईश्वर का बड़प्पन स्वतंत्र है, कुछ भी छोटा काम करने से जिसके ऐश्वर्य में रत्तीभर भी कमी-वृद्धि नहीं होती, उसीका नाम ईश्वर है।

बच्चा नाव में से गिर गया तो क्या बाप नौकरों को बुलायेगा, खलासियों को बुलायेगा ? माँ-बाप तुरंत कूद पड़ेंगे। यह भगवान का औदार्य, प्रेम और लोकमांगल्य की मधुर व्यवस्था है कि वे स्वयं आते हैं।

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥

(गीता : १३.२४)

भगवान कहते हैं : कुछ लोग ध्यानयोग के द्वारा, कुछ कर्मयोग के द्वारा तो कोई सांख्य (तत्त्वज्ञान) के द्वारा मुझ आत्मा को, परमेश्वर-स्वभाव को पाकर मुक्त हो जाते हैं।

लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो ध्यान नहीं कर सकते, जिनकी तत्त्वज्ञान में गति नहीं है, कर्म को योग बनाने में रुचि नहीं, शक्ति नहीं है। वे क्या करें ? 'गीता' के १३वें अध्याय के २५वें श्लोक में कहा है :

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥

दूसरे मनुष्य इस प्रकार नहीं जानते हैं - ज्ञान, ध्यान, कर्मयोग। केवल जीवन्मुक्त महापुरुषों से सुनकर उपासना करते हैं। ऐसे वे सुनने के परायण मनुष्य भी मृत्यु को तर जाते हैं।

कोई घर से कुछ लाया, कोई कुछ लाया और यशोदालाल भी कुछ लाया। ग्वाल-गोपों के साथ मिल-मिलाकर खाते हैं। वृद्ध ब्रह्माजी को शंका हुई कि 'यही ब्रह्म हैं, जो संकल्पमात्र से सृष्टि की उत्पत्ति, प्रलय कर सकते हैं ! वे बछड़े चरानेवालों के साथ बैठकर खायें ! शायद कुछ गलती हो रही है। परीक्षा करते हैं।'

जो गायें और बछड़े चर रहे थे, ब्रह्माजी ने उनको अपने बल से ब्रह्मलोक भेज दिया। ग्वाल-बाल बोले : ''गायें कहाँ गयीं ? कन्हैया ! हमारी गायें नहीं हैं, माँ मारेगी।''

कन्हैया ने देखा, 'एक-दो नहीं, सब-की-सब गायब !' ध्यान करके देखा कि 'अरे ! मेरे बारे में शंका का समाधान करने के लिए ब्रह्माजी गायें ब्रह्मलोक ले गये। कोई बात नहीं।'

फिर ब्रह्माजी ग्वाल-बालों को भी चुराकर ब्रह्मलोक ले गये। ब्रह्माजी ने सोचा कि 'अब देखें कि जूठन खानेवाले कृष्ण की क्या हालत होती है ! अगर भगवान नहीं हैं तो पुकारेंगे कि हे ब्रह्माजी ! हाय-हाय !! लाज रखो !'

कृष्णजी ने देखा कि जो ग्वाल-बाल गायें खोज रहे थे, वे भी गायब ! **एकोऽहं बहु स्याम्।** श्रीकृष्ण ने वैसी-की-वैसी गायें, वैसे-के-वैसे ग्वाल प्रकट कर दिये। एक दिन बीता (देवलोक का एक दिन इस जगत के एक वर्ष के समान है) तो ब्रह्माजी ने देखा कि 'उतने-के-उतने ग्वाल, उतनी-की-उतनी गायें ! मेरे जैसा धोखा खा गया परमात्मा को पहचानने में तो दूसरों की क्या बात है !' फिर ब्रह्माजी ने जो स्तुति की वह भागवत में है। **(शेष पृष्ठ २८ पर)**

परिप्रश्नेन...

प्रश्न : आपकी करुणा-कृपा से प्रभु ! मुझे ऐसा लगता है कि 'मैं आकाशस्वरूप हूँ, सबमें हूँ, सर्वत्र हूँ ।' जब तक ऐसा लगता है तब तक आनंद आता है, फिर वापस स्थूल शरीर में आ जाते हैं तो आनंद आना बंद हो जाता है । ऐसा बहुत दिनों से होता है लेकिन उसके आगे स्थिति नहीं जा रही प्रभु !

पूज्य बापूजी : उसके आगे कौन-सी स्थिति है ?

प्रश्नकर्ता : समझ में नहीं आ रहा है प्रभु !

पूज्यश्री : समझ में आयेगा तो बुद्धि को आयेगा न लाला ! उस बुद्धि की समझ में जो आयेगा वह ससीम होगा । भगवान असीम हैं । तुम 'भगवान समझ में आयें' - ऐसा सोचोगे तो थक जाओगे, हजार जन्म में भी समझ में नहीं आयेंगे । वे समझ में आ गये तो अंतवाले हो जायेंगे । भगवान अनंत हैं । जो चीज खरीदते हो जितने रुपये में वह उससे सस्ती, कम की होगी तभी तुम्हें मिलेगी । तो यदि भगवान तुम्हारी बुद्धि से नन्हे होंगे तभी तुम्हारी बुद्धि में, समझ में आयेंगे । तुम्हारी बुद्धि तो क्या सारी दुनिया की सभी बुद्धियाँ मिला दो, फिर भी भगवान को पूरा समझ पाना सम्भव नहीं । भगवद्विश्वास करके अपने-आपको भगवान में विश्रांति दिलानी है, समझने की कोशिश नहीं करनी है ।

हद टुपे सो औलिया बेहद टुपे सो पीर ।
हद बेहद मैदान में सोया दास कबीर ॥

समझ और नासमझी दोनों के बीच का... जो समझ को भी जानता है, नासमझी को भी जानता है वह, उसी मेरे साजन में विश्रांति... ॐ... ॐ... ॐ... समझने की कोशिश ही मत करो । संसार को समझना होता है और भगवान को मानना होता है । संसार को समझोगे तो पता चलेगा कि धोखे से भरा है, मौत से भरा है । कितना भी सुंदर-सुंदरी, लवर-लवरी एक-दूसरे पर कुर्बान होते हों, फिर भी कपट करते हैं पति-पत्नी आपस में; संसार कपट से भरा है । कितनी भी कुछ दवाइयाँ लो, नियम से रहो, फिर भी संसार बीमारी और मौत से भरा है । संसार को समझना होता है और ईश्वर को मानना होता है । जहाँ मानना है वहाँ समझने की कोशिश कर रहे हैं, जहाँ समझना है वहाँ मान बैठे हैं, तो उलटी गाड़ी चलेगी । इसलिए गाड़ी का रुख बदलो । समझने का सोचो ही मत । ॐ... शांति । समझने की कोशिश करोगे तो तुम बने रहोगे, ईश्वर से दूर हो जाओगे । ❑

आत्मस्वरूप की तीन विशेषताएँ

१. उसमें किसीके अनिष्ट की कारणता नहीं है । अतः तुम न अपना अनभल करो, न दूसरे का । तुम आनंदस्वरूप हो । तुम्हारे अपने जीवन में वह रस, वह सौंदर्य, वह माधुर्य है कि इसमें दूसरे किसीका अनिष्ट है ही नहीं ।

२. तुम वह ज्ञान-प्रकाश हो कि उसमें अंधकार है ही नहीं । अतः न तुम्हारे कारण कोई ठगा जाता है और न तुम किसीसे ठगे जा सकते हो । यदि तुम किसीसे ठगे जाते हो तो अज्ञानी हो । यदि तुम दूसरे किसीको ठगते हो तो अज्ञान का दान करते हो । यदि तुम्हारे पास अज्ञान न होता तो वह तुम दूसरे को देते कैसे ! तुममें तो ज्ञान-ही-ज्ञान है ।

३. तुम अमृत हो । न तुम स्वयं मरते हो, न दूसरे को मारते हो । तुम मृत्युदाता नहीं, तुम स्वयं अमृत हो । दूसरे भी तुमसे अमृतत्व ही प्राप्त करते हैं ।

तुम ऐसे रस हो जो कभी फीका नहीं पड़ता । तुम ऐसे रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द हो जिससे कभी जी ऊबता नहीं । तुम ऐसे स्वर हो जो कभी बेसुरा नहीं होता । जब तुम वासना के वशवर्ती होकर भाग-दौड़ मचाते हो तो अपने को दरिद्र बना लेते हो । अपने भीतर तुम्हें अभाव दिखायी देता है, तभी तो तुम उसे पूरा करने बाहर दौड़ते हो ! यही अपने भीतर बैठे ईश्वर का तिरस्कार है ।

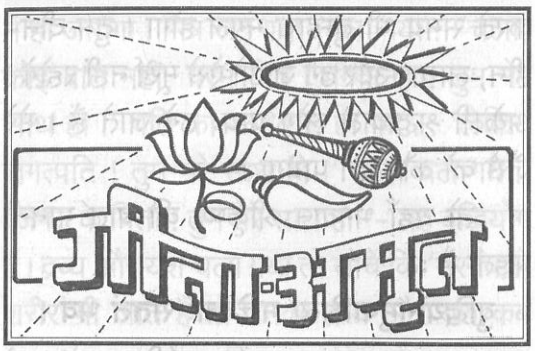

बुद्धियोगमुपाश्रित्य...

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

श्रद्धालु होना बहुत जरूरी है। श्रद्धा के बिना धर्म नहीं होता, श्रद्धा के बिना सत्कर्म फलता नहीं, श्रद्धा के बिना जीवन रूखा हो जाता है। श्रद्धाहीन व्यक्ति तो शुष्क है, बेकार है। अपने लिए, दूसरों के लिए, समाज के लिए, मानवता के लिए कलंक है। लेकिन अकेली श्रद्धा से काम नहीं चलता है। श्रद्धा का स्थान हृदय है और बुद्धि का मस्तिष्क। अकेला हृदय होगा और मस्तिष्क अविकसित होगा तो व्यक्ति फँस जायेगा। अकेला मस्तिष्क विकसित होगा और हृदय में सुख-शांति नहीं होगी तो क्लबों में रहेगा, व्यसन व मनमाने कर्मों की धूल चाटता रहेगा। जैसे मनुष्य दो पैरों से चलता है, पक्षी दो पंखों से उड़ता है, साइकिल, स्कूटर, बाइक दो पहियों से चलते हैं, सृष्टि में सूर्य और चाँद दोनों की जरूरत होती है, शारीरिक संतुलन के लिए दायें और बायें दोनों नथुनों का चलना जरूरी है, ऐसे ही श्रद्धा भी चाहिए और बुद्धियोग भी चाहिए।

बुद्धिमान में श्रद्धा नहीं होगी तो फिर बुद्धिमान दारू और पिक्चर में मरता है और श्रद्धालु में बुद्धियोग नहीं तो श्रद्धालु खुद को ठगा के मरते हैं। इसलिए भगवान कहते हैं : श्रद्धा के साथ बुद्धियोग का होना भी जरूरी है।

बुद्धियोगमुपाश्रित्य... (गीता : १८.५७)

बुद्धियोग से उपासना करनेवाला सब द्वंद्वों से, सब दुःखों से, सब विकट परिस्थितियों से पार होकर मुझ परमेश्वर को पा लेता है।

तो बुद्धियोग किसको मिलता है ? बोले :

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥

(गीता : १०.१०)

जो प्रीतिपूर्वक भजता है, वह बुद्धियोग को पाता है। तो भगवान में प्रीति कैसे हो ? जिसमें अपनापन होगा उससे प्रीति होगी। जूता अपना लगता है तो प्यारा हो जाता है। वास्तव में जूता पहले अपना नहीं था, बाद में अपना नहीं रहेगा लेकिन आत्मदेव तो पहले भी हमारे अपने थे, अभी भी हैं, बाद में भी रहेंगे। इस समय भी हमारे साथ हमारे अंतरात्मदेव होकर बैठे हैं। इस प्रकार के बुद्धियोग की उपासना जिस बुद्धियोगी ने भी की, उसने हँसते-खेलते विघ्न-बाधाओं पर, कष्टों पर पैर रखते हुए, भगवान श्रीकृष्ण की तरह संसाररूपी कालिय नाग पर नृत्य करते हुए संसार-सागर से पार होकर परम वैभव को पा लिया। चाहे फिर कबीरजी हों, नानकजी हों, लीलाशाह प्रभुजी हों, राजा परीक्षित हों, संत रविदास हों, एकनाथजी हों या फिर धन्ना जाट, सदना भक्त, शाण्डिली कन्या हो चाहे अनपढ़ शबरी भीलन हो, जिन्होंने भी प्रीतिपूर्वक भगवान को सुमिरा, भजा उनको बुद्धियोग मिला।

बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव।

(गीता : १८.५७)

भगवान कहते हैं : मुझ सत्स्वरूप, चेतनस्वरूप, आनंदस्वरूप ईश्वर में चित्त लगाओ, बुद्धियोग की उपासना करो। बाहर के मंदिरों में बहुत गये, उसका फल है मुझ अंतर्यामी ईश्वररूपी मंदिर में आना। बाहर की मस्जिद और पूजा-स्थलों में बहुत गये, उसका फल है बुद्धियोग की उपासना

करके मुझ अल्लाहस्वरूप आत्मा में आना।

बुद्धियोग की उपासना की रीति जान लें। उससे बड़ा वैभव प्राप्त होता है। जिस वैभव को यहाँ के चोर-लुटेरे तो क्या, यहाँ की सरकार तो क्या, मौत के बाप की भी ताकत नहीं कि लूट सके, ऐसा होता है बुद्धियोग ! संतान पैदा करने की, सुख में टिके रहने की, दुःख से भागने की साधारण बुद्धि कौवे और कुत्ते के पास भी है, खटमल और मच्छर के पास भी है, घोड़े-गधों के पास भी है। मनुष्य ऐसी बुद्धि लेकर क्या करेगा ! मनुष्य की विशेषता है कि बुद्धि में वह महान योग भर ले। कौन-सा योग ? भगवद्विश्रांति, भगवत्प्रीति, भगवद्ज्ञान योग।

भगवद्ज्ञान योग तक की यात्रा करने के लिए श्रद्धा भी चाहिए, बुद्धियोग भी चाहिए। और बुद्धियोग के साथ समाधि भी चाहिए, विचार भी चाहिए, उत्साह भी चाहिए। अकेला उत्साह है तो आदमी भ्रमित हो जायेगा। अकेली समाधि है तो आदमी आलसी हो जायेगा। अकेली श्रद्धा है तो आदमी ठगा जायेगा। अकेली बुद्धि है तो आदमी शुष्क हो जायेगा। इसलिए **उत्साह, समाधि, श्रद्धा, बुद्धियोग और विचार – इन पाँचों का संतुलन जीवन में बहुत जरूरी है।** ये पाँचों चीजें जितनी-जितनी ठीक-ठाक होंगी, उतना-उतना जीवन निर्भार, निर्द्वंद्व और निश्चिंत नारायण में विश्रांति पायेगा और जितना विश्रांति पाने में आप सक्षम हो जायेंगे, उतना ही चिन्मय विचार, चिन्मय आरोग्यता, चिन्मय ज्ञान और चिन्मय प्रसन्नता आपकी मुट्ठी में आ जायेगी।

तो कर्म को भगवत्सत्ता का सम्पुट देकर कर्मयोग बना लो। भक्ति को भगवद्रस का सम्पुट देकर भक्तियोग बना लो। ज्ञान को भगवत्-तत्त्व का सम्पुट देकर ज्ञानयोग बना लो। फिर तो कर्म करते समय भी योग का आनंद आयेगा, भक्ति करते समय भी तुम्हारा मंगल होगा। तुम दीन-हीन, लाचार और ठगे जाओ ऐसे मूर्ख नहीं रहोगे। अकेली श्रद्धावाले लोग प्रायः ठगे जाते हैं। मेरे जैसे को कौन ठग पायेगा !

तो यहाँ भगवान श्रीकृष्ण की बात माननी पड़ती है :

बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव।

(गीता : १८.५७)

मुझ सर्वव्यापक ईश्वर की उपासना करके बुद्धि को आप कुशल बनाओ। किसीने कुछ ढेला रख दिया, किसीने कुछ रख दिया और आप नाक रगड़ते-रगड़ते जिंदों से तो माँग रहे हो और मुर्दों का भी पीछा नहीं छोड़ते हो, कैसी बेवकूफी है !

आप आज से ही निश्चय करो कि 'मुझे अब बुद्धियोग का प्रसाद पाना है। सभी दुःखों के सिर पर पैर रखकर, सभी सुखों के लालच पर पैर रखकर परम आनंद पाना है।' अपने कमरे में ज़रा धूप-दीप ज़ला देना, जिससे वातावरण पवित्र हो जाय और ठाकुरजी को, भगवान को अथवा गुरुजी को एकटक देखो। ॐकार का दीर्घ उच्चारण करो। प्रारम्भ में कम-से-कम छः मिनट तक देखो, फिर आँखें बंद करके बैठ जाओ। 'दुःख होता है उसको जाननेवाला मैं कौन हूँ ?' बस खोजो। 'शरीर मरता है, फिर भी जो नहीं मरता वह मैं कौन हूँ ?' पहले दिन से ही आपको बुद्धियोग की झलकें मिलने लगेंगी और कुछ दिन के निरंतर अभ्यास से तो आप बुद्धियोगी बन जायेंगे।

अजपाजप करके चालू व्यवहार में भी बुद्धियोग का आश्रय ले सकते हैं। श्वासोच्छ्वास की साधना की जो विधि बतायी जाती है, रात्रि को सोते समय उसका अभ्यास करें। दीक्षा के समय जो प्रयोग बताये जाते हैं गर्दन पीछे करके करने के, वे सुबह उठने के बाद करें। सत्संग-सान्निध्य से ऐसे पुण्यात्माओं का बुद्धियोग सहज

में हो जायेगा। मित्र रूठ गया, चला गया... 'चलो, कोई बात नहीं, परम मित्र (भगवान) ! तुम मेरे साथ हो।' पति का स्वर्गवास हो गया... 'लेकिन जगत्पति ! तुम मेरे साथ हो।' पिता चले गये... 'जगत के पिता ! तुम मेरे साथ हो' - यह बुद्धियोग है। द्रव्य और यश चला गया तो सोचे कि 'मरनेवाले शरीर भी जाते हैं तो उनका द्रव्य और यश कब तक !' इस प्रकार विचार करके जो धन, द्रव्य मिल गया, उसका सदुपयोग करे कि 'वाह-वाह प्रभु ! सेवा के लिए दिया।' और चला गया तो समझे कि 'वाह प्रभु ! तुमने आसक्ति मिटाने के लिए लीला की है।' सफलता-विफलता जो भी आये, 'उसमें मेरे प्रभु का हाथ है।' - ऐसा समझकर प्रसन्न रहना, यह बुद्धियोग है।

पुण्यों से, उद्योग से, प्रारब्ध से सफलता मिलती है। उसका सदुपयोग करना, यह बुद्धियोग है। दुनिया में सारी चीजें मिल जायें लेकिन बुद्धियोग के बिना दुःख नहीं मिटता और बुद्धियोग मिल गया तो सारी चीजें चली जायें अथवा हजार गुनी होकर आ जायें आदमी फँसता नहीं, इतराता नहीं।

मनुष्य को अपने आत्मा-परमात्मा में विश्राम पाने की शक्ति बुद्धियोग देता है। जो जरूरी कार्य है, बहुत जरूरी है उसमें तत्पर रहो, सजग रहो और बुद्धिमत्ता से कर डालो। कार्य कर डालोगे तो करने की जो वासनाएँ हैं, उनके शांत होते ही आत्मा में विश्रांति मिलेगी, बुद्धियोग का प्रसाद मिलेगा। जिससे बुद्धि ठगी करनेवाली नहीं, परोपकारी बनेगी। दूसरे को ठगनेवाली बुद्धि बुद्धि नहीं, वह तो कुबुद्धि है। जो दूसरे का ज्ञान बढ़ाये, तंदुरुस्ती बढ़ाये, प्रसन्नता बढ़ाये, निर्भयता बढ़ाये, वह बुद्धि है। आत्मा शाश्वत है तो मरने से डरो नहीं, दूसरे को डराओ नहीं, यह बुद्धियोग है। आत्मा ज्ञानस्वरूप है तो अपना भी आत्मज्ञान, आत्मविश्रांति बढ़ाओ, (शेष पृष्ठ १४ पर)

गुरुदेव तेरी रहमत

गुरुदेव तेरी रहमत, खुदा से कम नहीं है,
बरसी तेरी खुदाई, फिर कोई गम नहीं है।
खोजूँ कहाँ मैं किसको, कोई तेरे सम नहीं है,
तू ही आसरा है मेरा, तू ही सत्य है शिवम् है॥

अपनों ने साथ छोड़ा, जग ने किया किनारा,
पकड़ा है हाथ तुमने, मुझको दिया सहारा।
बालक हूँ मैं तो तेरा, पितु मात तू हमारा,
तेरा साया जब दयालु, दुःख-दर्द न रंजोगम है॥

जन्मों का भूला राही, मंजिल न कोई पायी,
खुद से रहा बेगाना, 'स्व' की न याद आयी।
पिला रामरस की प्याली, निज ज्ञान की राह दिखायी,
सुखस्वरूप 'साक्षी' चेतन, घट-घट वही सनम है॥

अविद्या का घोर अँधेरा, गुरुज्ञान से सवेरा,
सराय जग है सारा, दिन-रैन का बसेरा।
कोई मनमीत ना हमारा, जन्म-कर्मों का है फेरा,
रोम-रोम रम रहा, वही सत्य हमदम है॥

संसार इस स्वप्न से, सद्गुरु ने है जगाया,
मोह-माया का पर्दा, अज्ञान-तम मिटाया।
परब्रह्म तत्त्व न्यारा, घट-घट में है समाया,
अणु-अणु में व्यापक, वही ओम् शिवोहम् है॥

- जानकी चंदनानी 'साक्षी'
अहमदाबाद। ❑

मनःस्थिति का परिमार्जन

(पूज्य बापूजी की विवेकसम्पन्न अमृतवाणी)

स्वामी श्री अखण्डानंदजी महाराज का एक सत्संगी था। उसने बताया कि 'मुझे पुस्तक पढ़ने का बड़ा शौक था। मैं डॉक्टर बनने के लिए पुस्तकें पढ़ता था। एक दिन मैं 'रोग के लक्षण एवं उसका इलाज' पढ़ रहा था। पढ़ते-पढ़ते मुझे लगा कि इसमें रोग के जो भी लक्षण बताये गये हैं, वे सब मुझमें हैं।'

कुछ आदमी कार्यालय जाते हैं, फिर बिना किसी मर्ज के दवाखाने जाते हैं। पूछो कि 'दवाखाने क्यों जा रहे हो ?' तो बोलेंगे : 'आज वैसे तो हम ठीक थे लेकिन टी.वी. में देखा और समाचार-पत्र में भी पढ़ा कि हिमालय में बर्फ पड़ी है और आज सर्दी ज्यादा हो गयी है तो मुझे भी अब सर्दी लग गयी है।'

जब तक टी.वी. नहीं देखा और समाचार नहीं पढ़ा था, तब तक सर्दी नहीं थी। यह मानसिक चिंतन का प्रभाव है।

ऐसे ही रोग के लक्षण 'ऐसा होता है, ऐसा होता है...' पढ़ते-पढ़ते उस आदमी को हुआ कि 'मेरे को तो ऐसा ही होता है...' पेट भारी-भारी लगना, कभी डर लगना कि क्या होगा - इस प्रकार के जो भी लक्षण होते हैं। फिर वह डॉक्टर के पास गया, उन्हें बताया कि ''मैं डॉक्टरी पढ़नेवाला विद्यार्थी हूँ। मैंने कई पुस्तकें पढ़ी हैं। इस प्रकार के लक्षण सारे-के-सारे मुझमें हैं। मेरे लिए क्या इलाज है ?''

डॉक्टर हँसने लगे। वह घबराया कि 'मेरे में रोग के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, मैं उपाय पूछता हूँ और डॉक्टर हँस रहे हैं ! मेरी क्या गलती है ?' डॉक्टर और हँसे। उसने पूछा : ''महाशय ! आप मेरे पर क्यों हँस रहे हैं ?''

उन्होंने कहा : ''पेट भारी-भारी, कमर में दर्द, कभी डकार आती है, फलाना-ढिमका... ये जो भी लक्षण तुम बता रहे हो, ये तो गर्भिणी स्त्री के हैं और तुम हो पुरुष ! तुम्हें तो प्रसूति होनेवाली नहीं है। लक्षण पढ़ते-पढ़ते तुम्हारी मानसिकता ऐसी हुई कि ये लक्षण मुझमें हैं तो तुम्हें ऐसा महसूस हो रहा है। वास्तव में ये गर्भिणी स्त्री के लक्षण हैं।''

ऐसे ही कई लोग मान लेते हैं कि 'मैं दुःखी हूँ, मेरा कोई नहीं है।' अरे, विश्व का नियंता हमारे साथ है। मौत भी हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती। हम आत्मा हैं। भगवान भी हमारे आत्मा को नहीं मार सकते, फिर भी हम घबरा रहे हैं ! उस विद्यार्थी की तरह सुनते-सुनते लक्षण आ रहे हैं कि 'यह होगा, वह होगा...।'

किस बच्चे का विकास कैसे होगा, यह माता जानती है। उसी तरह किस जीव का विकास कैसे होगा, वह परमात्मा जानते हैं। फिर काहे घबराना ! ॐ आनंद.... ॐ उत्साह... ॐ हिम्मत... ❑

(पृष्ठ १३ से 'बुद्धियोगमुपाश्रित्य...' का शेष)

दूसरों का भी बढ़ाओ, यह बुद्धियोग है। आत्मा आनंदस्वरूप है, सुखरूप है। अपना आत्मसुख, अपनी आत्मविश्रांति बढ़ाओ, दूसरों की भी आत्मविश्रांति बढ़े ऐसे कार्य करो। बुद्धि से जो करो वह परमात्मयोग के लिए करो, बुद्धियोग के लिए करो। इससे तुम्हारा दुःख तो मिट जायेगा, तुम्हारी वाणी और दीदार से औरों के पाप-ताप, संताप और दुःख मिट जायेंगे। तुम ऐसे बन जाओ न लाला ! लालियाँ ! ❑

उपयुक्त आहार

ईरान के बादशाह वहमन ने एक श्रेष्ठ वैद्य से पूछा : ''दिन में मनुष्य को कितना खाना चाहिए ?''

वैद्य बोला : ''सौ दिरम (अर्थात् ४५० ग्राम)।''

बादशाह ने फिर पूछा : ''इतने से क्या होगा ?''

वैद्य ने कहा : ''शरीर के पोषण के लिए इससे अधिक नहीं चाहिए। इससे अधिक जो कुछ खाया जाता है, वह केवल बोझा ढोना है और आयुष्य खोना है।''

लोग स्वाद के लिए अपने पेट के साथ बहुत अन्याय करते हैं, ठूँस-ठूँसकर खाते हैं। यूरोप का एक बादशाह स्वादिष्ट पदार्थ खूब खाता था। बाद में औषधियों द्वारा उलटी करके फिर से स्वाद लेने के लिए भोजन करता रहता था। वह जल्दी मर गया। आप स्वादलोलुप नहीं बनो। जिह्वा को नियंत्रण में रखो। क्या खायें, कब खायें, कैसे खायें और कितना खायें इसका विवेक नहीं रखा तो पेट खराब होगा, शरीर को रोग घेर लेंगे, वीर्यनाश को प्रोत्साहन मिलेगा और अपने को आप पतन के रास्ते जाने से नहीं रोक सकोगे।

न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे की पत्नी ने आम काटकर उन्हें खाने के लिए दिये। उन्होंने मात्र दो फाँकें खाकर कहा :

''बाकी की बाँट दो।''

पत्नी ने कहा : ''इतने मीठे हापूस एवं केसर आम हैं, सुगंधित भी हैं। आप क्यों नहीं खाते ? क्या आपको अच्छे नहीं लगे ?''

रानडे ने कहा : ''जो वस्तु ज्यादा प्रिय हो उसका ज्यादा उपयोग करूँगा तो स्वादलोलुपता बढ़ती जायेगी। आम तो मेरा प्रिय पदार्थ है लेकिन इसकी प्रियता में मुझे फँसना नहीं है। मन-इन्द्रियों की गुलामी से जीव का पतन होता है। मुझे स्वादलोलुप नहीं होना है बल्कि संयम के लिए प्रिय वस्तु बँटवानी है, उपभोग की आदत को उपयोग में बदलना है।'' आसक्ति मिटाने का यह सुंदर तरीका है। प्रिय वस्तु खाकर खुश होने के बदले उसे खिलाकर खुश होना चाहिए। इस प्रकार वासना का गुलाम होने के बदले वासना की निवृत्ति में ध्यान देना चाहिए।

पवित्र स्थान पर बैठकर प्रेमपूर्वक शांत मन से भोजन करो। जिस समय नासिका का दाहिना स्वर (सूर्य नाड़ी) चालू हो उस समय किया हुआ भोजन शीघ्र पच जाता है, उस समय जठराग्नि बड़ी प्रबल होती है। भोजन के समय यदि दाहिना स्वर चालू नहीं हो तो उसको चालू कर दो। उसकी विधि इस प्रकार है : वाम कुक्षि में अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी रखकर कुक्षि (बायीं काँख) को जोर से दबाओ या बायीं करवट लेट जाओ। थोड़ी ही देर में दाहिना यानी सूर्य स्वर चालू हो जायेगा। रात्रि को बायीं करवट लेकर सोना चाहिए। दिन को सोना उचित नहीं किंतु यदि लेटना आवश्यक हो तो दाहिनी करवट ही लेटना चाहिए।

एक बात का खूब ख्याल रखो कि पेय पदार्थ लेना हो तो जब चन्द्र (बायाँ) स्वर चालू हो तभी लो। यदि सूर्य (दाहिना) स्वर चालू है और आपने वह लिया तो वीर्य दुर्बल होता है और वीर्यनाश की सम्भावना बढ़ सकती है। खबरदार ! सूर्य स्वर चल रहा हो तब कोई भी पेय पदार्थ न पियो। उस समय यदि पेय पदार्थ पीना पड़े तो दाहिना नथुना बंद करके बायें नथुने से श्वास लेते हुए ही पियो। ❑

संसार मुसाफिरखाना

– भगवत्पाद स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज

यह दुनिया सराय है। सराय में हर चीज से काम निकाला जाता है। वह किसी यात्री की निजी सम्पत्ति नहीं है।

प्रत्येक यात्री जैसे सराय में थोड़े समय के लिए सुख लेकर तत्पश्चात् अपने-अपने देश को जाता है, वैसे ही हम जो धन, माल, परिवार देखते हैं, वह सब थोड़े समय के लिए है। अतः उनमें आसक्त न होओ।

दुनियारूपी सराय में रहते हुए भी उससे निर्लेप रहा करो। जैसे कमल का फूल पानी में रहता है परंतु पानी की एक बूँद भी उस पर नहीं रहती, इस प्रकार संसार में रहो।

तुलसीदासजी कहते हैं :

तुलसी इस संसार में भाँति भाँति के लोग।
हिलिये मिलिये प्रेम सों नदी नाव संयोग॥

नौका में कई चढ़ रहे हैं और उतर रहे हैं, परंतु कोई भी उसे अपने रहने का स्थान नहीं समझता, वैसे हम संसार में रहें।

घर को स्वर्ग बनाओ

माताओं और भाइयों को चाहिए कि घरों को स्वर्ग बनायें। बँगले में रहो अथवा सादी झोंपड़ी में, उसे सराय (मुसाफिरखाना) समझकर संतोष में रहो। चाहे बहुत मिले चाहे थोड़ा मिले, हर स्थिति में धैर्य, शांति और शुक्र में रहो।

जिस रंग में मालिक राखे,
उसी रंग में रहना, कभी कुछ न कहना।

स्वयं को कभी दुःखी मत समझो। बिना संतोष के मनुष्य बार-बार जलता रहता है। घर में लड़ाई-झगड़ा आग समान है। सबमें परमात्मा की ज्योति समझकर सबसे प्रेम का बर्ताव करो। आसक्ति न रखो। वह तुम्हें दुःख देगी। तुम सराय में जाते हो, वहाँ कई चीजें मिलती हैं तो क्या उनमें ममता रखते हो ? नहीं। वैसे यह मुसाफिरखाना है। यहाँ से चलना है। संसार एक सराय के समान है, ऐसे जानो। सब वस्तुओं से काम निकालो किंतु आसक्ति किसीमें भी न रखो। आसक्ति, अहंकार और वासनाओं को छोड़ दो, फिर तो आनंद-ही-आनंद है।

देह से भिन्न

यह शरीर न पहले था और न बाद में ही रहेगा, अपितु आत्मा-ही-आत्मा, आनंद-ही-आनंद, एक ब्रह्म ही व्यापक, अखण्ड, सबका साक्षी, सबमें एक समान है। यह देह पाँच तत्त्वों की बनी है, जो किराये पर खरीद करके आये हैं, परंतु हम अपने को देह समझ बैठे हैं। देह जिन पाँच तत्त्वों की बनी हुई है, हम वे तत्त्व नहीं, न हममें वे तत्त्व हैं।

जीवन का उद्देश्य

मनुष्य शरीर, जाति, वर्ग, आश्रम, धर्म आदि से अपनी एकता करके उनका अभिमान करने लगता है, उन्हें अपना समझता है और उनके अनुसार स्वयं को कई बंधनों में बाँधकर राग-द्वेष करने लगता है, तभी उसका मन अशुद्ध रहता है। अतः साधक को यही विश्वास और निश्चय करना चाहिए कि 'मैं शरीर नहीं हूँ। मुझे मनुष्य - शरीर भगवान की कृपा से साधना के लिए मिला है।' यह निश्चय करके शरीर में सुख की भावना नहीं रखनी चाहिए। जो प्राप्त हो **(शेष पृष्ठ १९ पर)**

नैतिक शिक्षा

महात्मा विदुर की जीवनोपयोगी बातें

✻ जो मनुष्य किसी प्रकार का संबंध नहीं रखते हुए भी मित्रभाव से व्यवहार करता है, वही मित्र है।

✻ जो पुरुष चंचल चित्तवाला है, जिसने संतजनों का संग नहीं किया है, उससे मित्रता करना अनित्य और अस्थिर है। ऐसे मनुष्य से मित्रता भी कल के लिए शत्रुता का कारण हो सकती है।

✻ जो बिना कारण क्रुद्ध हो जाते हैं तथा बिना कारण प्रसन्न होते हैं, ऐसा स्वभाव दुर्जनों का होता है। जैसे जलहीन बादल सर्वत्र घूमता है लेकिन उसका उपयोग कहीं नहीं होता है, उसी प्रकार ऐसे व्यक्ति के क्रोध और प्रसन्नता का कोई मूल्य नहीं होता है।

✻ जो व्यक्ति मित्रों से सत्कार पाकर और प्रयोजन सिद्ध करके भी मित्रों का हित नहीं करते, उन कृतघ्नों के मरने के बाद उन्हें गीध भी नहीं खाते हैं।

✻ धन नहीं रहने के बाद भी मित्रों का आदर करना चाहिए। मित्रों से विशेष प्रयोजन नहीं रहने के बाद भी मित्रों की सहायता करनी चाहिए।

✻ अपने चरित्र की रक्षा करनी चाहिए। **जिसका चरित्र अच्छा नहीं है, वह नष्ट हो जाता है।**

✻ संताप से ज्ञान, बल व रूप नष्ट होता है तथा रोग उत्पन्न हो जाता है। अतः संताप कभी नहीं करना चाहिए।

✻ शोक से शरीर में कष्ट होता है तथा शत्रु प्रसन्न होते हैं। अतः शोक मत करो।

✻ सुख-दुःख, लाभ-हानि, जीवन-मरण तथा होना एवं न होना, ये सब संसार के स्वाभाविक कर्म हैं तथा बारी-बारी से सबको स्पर्श करते हैं। इसलिए बुद्धिमान मनुष्य को इनसे न प्रसन्न होना चाहिए और न दुःखी।

✻ मन से युक्त ये छः इन्द्रियाँ अत्यंत चंचल हैं। इन इन्द्रियों के द्वारा जैसे-जैसे भोग बढ़ता है, वैसे-वैसे भोग करनेवाले पुरुष की बुद्धि नष्ट हो जाती है, जैसे छेदयुक्त घड़े से जल निकल जाता है।

✻ विद्या, तपस्या, इन्द्रियसंयम तथा लोभत्याग शांति के साधन हैं।

✻ बुद्धि से मनुष्य भय समाप्त करता है, तपस्या के द्वारा महान पद को प्राप्त करता है, गुरुसेवा द्वारा ज्ञान और योग से शांति तथा मोक्षपद को प्राप्त करता है।

✻ हे धृतराष्ट्र ! ब्राह्मणों, गायों और संबंधीजनों के ऊपर जो वीरता दिखलाते हैं, वे पके हुए फल के समान डण्ठल से गिर जाते हैं अर्थात् नष्ट हो जाते हैं।

✻ अकेला वृक्ष महान तथा अच्छी तरह जड़ पकड़े होने पर भी क्षण भर में ही आँधी के द्वारा बलपूर्वक उखाड़ा जा सकता है। और जो वृक्ष समूहरूप में अच्छी प्रकार से खड़े हैं, वे एक-दूसरे के आश्रय से भयंकर आँधी को भी सह लेते हैं। इसी प्रकार अकेले मनुष्य को गुणों से युक्त रहते हुए भी शत्रु नष्ट कर देते हैं परंतु मिलजुलकर रहने से, एक-दूसरे के सहयोग से संबंधी भी बढ़ते हैं, जैसे कमल सरोवर में खिलते हैं।

✻✻✻

✻ हमें हित में लगाता है, हमारी गोपनीय वस्तुओं को छिपाता है, गुणों को प्रकट करता है, आपत्काल आने पर मदद करता है और बुरे समय पर छोड़ता नहीं है, अच्छे मित्र के ये लक्षण संत लोग कहते हैं। **- योगी भर्तृहरि** ☐

दुःख व बंधन का कारण : वासना

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

पूज्य मोटा के मित्र-संत थे योगेश्वरजी महाराज । योगेश्वरजी महाराज वालकेश्वर गाँव में सेनेटोरियम (स्वास्थ्य-निवास) में रहने गये थे । वे कमरे में लेटे तो उन्हें बड़ी हावभाववाली ३०-३२ साल की एक सुंदर स्त्री सामने खड़ी दिखाई दी । योगेश्वर महाराज साधन-सम्पन्न थे, डरे नहीं । उन्होंने उस स्त्री से पूछा : ''तुम कौन हो ?''

वह बोली : ''आप आये हो तो मैंने यह खाट खाली कर दी है । मैं इसी खाट पर रहती थी । मुझे यह कमरा और यह खाट बड़ी प्रिय है । प्रसूति करते-करते मेरी मौत हो गयी थी । अब मैं यहीं रहती हूँ ।''

योगेश्वर महाराज समझ गये कि यह प्रेतात्मा है ।

''तुम क्या चाहती हो, क्या करती हो ?''

''बस यहीं रहती हूँ । लोगों को बीमार करती हूँ, मुझे मजा आता है ।''

''ऐसा क्यों ?''

''अकेले में क्या ! कुछ-न-कुछ करना होता है । मैं बीमार होकर मरी तो दूसरों को बीमार करने में मुझे रस आता है । अच्छा, मैं जाती हूँ । आपको बीमार नहीं करूँगी ।''

वालकेश्वर गाँव में सेनेटोरियम के उस खण्ड में जो आये थे, रहे थे, वे सभी एक-एक करके बीमार हुए थे ।

लंगर लगा है तो नाव बँधी रह जायेगी

रामकृष्ण परमहंस गोपाल की माँ के घर गये थे । साथ में राखाल नाम का सेवक था । जिस कमरे में रामकृष्ण आराम कर रहे थे, राखाल ने देखा कि ठाकुर वहाँ किसीसे बात कर रहे हैं । दोपहर का समय था । ठाकुर अचानक उठकर बाहर जाने लगे ।

राखाल ने पूछा : ''ठाकुर ! तुम अपना बिछौना लेकर बाहर क्यों जा रहे हो ?''

''यहाँ जो रहते थे, वे मेरे कारण दुःख पा रहे हैं । इस घर में प्रेत रहते हैं । वे बोलते हैं कि तुम्हारे कारण हम धूप में भटक रहे हैं ।''

मैंने कहा : ''मेरे कारण तुम लोग धूप में मत भटको । मैं जा रहा हूँ ।''

सेवक ने कहा : ''तुम्हारे जैसे संत के दर्शन करने के बाद भी भूत अपनी दुर्गति से पार नहीं होते ?''

''समय पाकर होंगे । अभी तो उन्हें इस कमरे में रहने की वासना पकड़ के बैठी है ।

राखाल ! चाहे कोई भी किसीको मिल जाय लेकिन अपनी वासना जब तक जीव बदलेगा नहीं, छोड़ेगा नहीं, तब तक उसकी वास्तविक उन्नति नहीं होगी । जैसे नाव कितनी भी जोर से चलाओ लेकिन लंगर लगा है तो नाव बँधी रह जायेगी, आगे नहीं बढ़ेगी ।''

कौन किससे बँधा है ?

सूफी संत जुनैद जा रहे थे अपने शागिर्दों के साथ । एकाएक रुक गये । एक गाय को घसीटकर ले जा रहा था उसका कहलानेवाला गोपाल ।

जुनैद ने कहा : ''देखो, यहाँ कौन किससे बँधा है ?''

मूर्ख सेवकों ने कहा कि 'गाय ग्वाले की रस्सी

से बँधी है, खिंची चली जा रही है।'

ग्वाला पहचानवाला था। जुनैद ने चाकू निकाला और रस्सी काट दी। गाय पीछे भाग गयी और ग्वाला उसके पीछे भागा लेकिन गाय आगे निकल गयी। गायवाला रुष्ट होकर कहता है : ''यह तुमने क्या मजाक किया ! मेरी गाय की रस्सी काट दी, अब वह हाथ नहीं आयेगी।''

जुनैद ने अपने सेवकों को कहा : ''अब कौन किससे बँधा है ? गाय खुल गयी तो गाय इसके पीछे नहीं गयी, यह गाय के पीछे गया। बताओ कौन बँधा है ?''

सेवक बोले : ''अभी पता चला कि यह बँधा है।''

ऐसे ही संसारी वस्तुओं के पीछे तुम भागते हो तो तुम बँधे हो। अपने-आपमें बैठना सीखो। अपने-आपमें प्रसन्न होकर, तृप्त हो के, अपने आत्मचैतन्य स्वभाव में स्थित होकर संसार में जियो, फिर संसार की चीजें तुम्हारे इर्दगिर्द मँडरायेंगी।

कहीं अपने को ही धोखा तो नहीं दे रहे हैं ?

ससुर ने दामाद को कहा कि ''मैं जा रहा हूँ विदेश। तू आर्किटेक्ट (भवन-निर्माता) है। यह ले चेकबुक। अच्छा-सा मकान बना। जल्दी बनाना, मैं आऊँ तो मकान तैयार हो। सुंदर बनाना, पैसे की कमी नहीं है।''

ससुरजी जब विदेश की यात्रा से लौटे तो उसने हलका माल डालकर, हलका सीमेंट, कंक्रीट... ये-वो करके बढ़िया रंग-रोगन से एक कोठी, एक बँगला तैयार रखा। हवाईअड्डे से ससुरजी को ले आया।

''मकान तैयार है ?''

''बिल्कुल तैयार है। यह उसकी चाबी है।''

''आज नहीं, कल। जो तुम्हारी पत्नी है, मेरी बेटी है, कल उसका जन्मदिवस है। कल उस कोठी को देखने चलेंगे। मेरी बेटी को भी ले आना।''

कोठी देखी, रंग-रोगन देखा, ससुर बड़ा प्रसन्न हुआ। जमाई से सब चाबियाँ लेकर बेटी की तरफ लक्ष्य करते हुए जमाई को दीं।

''यह मकान मेरी पुत्री के जन्मदिवस पर मैं तुम्हें अर्पण करता हूँ।''

जमाई पछताया कि 'अरे, जो मुझे मिलनेवाली चीज थी उसमें मैंने ऐसा हलका, तुच्छ रोड़ी-सामान डाल दिया ! मैंने बेईमानी करके मेरे को ही धोखा दिया।'

हे जीव ! जो तू करता है, जो तू देता है, घूम-फिर के तुझे ही मिलता है, इसलिए तू देने में, सेवा करने में, प्रेम देने में, प्रभुस्नेह करने में कंजूसी मत कर, नकली भाव मत ला। तू असली प्रीति कर।

मुझे वेद पुरान कुरान से क्या !
मुझे सत्य का पाठ पढ़ा दे कोई।
प्रभुप्रीति का पाठ पढ़ा दे कोई।
मुझे मंदिर मस्जिद जाना नहीं,
मुझे आत्म-मंदिर में पहुँचा दे कोई॥

ऐसे गुरु मिल जायें बस। ❑

(पृष्ठ १६ से 'संसार मुसाफिरखाना' का शेष)

उसका शुद्ध उपयोग करना चाहिए। सत्संग सदैव करते रहना चाहिए, जीवन के अंतिम समय तक। सत्संग से ही सत्य को समझा जा सकेगा। जहाँ सत्संग न होता हो वहाँ सत्शास्त्र का अभ्यास करना चाहिए। वह भी सत्संग है। संतों और सत्शास्त्रों के वचन ग्रहण करने चाहिए। इस प्रकार अंत तक करते रहना चाहिए। सदैव दृढ़ निश्चय से स्वयं को जानना चाहिए, उससे कभी पीछे नहीं हटना चाहिए। चाहे कितने भी कष्ट एवं दुःख आयें किंतु लोहे जैसा दृढ़ होकर दृढ़ता से कार्य करते रहना चाहिए और आगे बढ़कर आनंद प्राप्त करना चाहिए। ❑

साजिश का भंडाफोड़

षड्यंत्रकारी राजू चांडक ने उगला सच

न्यायाधीश श्री डी.के. त्रिवेदी जाँच आयोग में दिनांक १०-९-२००९ के बयान में राजू चांडक ने पवित्र, निर्दोष संत पूज्य बापूजी पर काल्पनिक, झूठे आरोप लगाये थे। राजू ने अपनी इस मनगढ़ंत आरोप की कहानी को जयपुर आश्रम में पूज्य बापूजी की कुटिया में देखा हुआ बतलाया। राजू ने कहा कि उसने यह घटना आश्रम छोड़ने के दो-चार महीने पहले देखी थी और बयान में बार-बार यह भी झूठ बोला कि उसने सन् २००४ में ही आश्रम छोड़ दिया था।

जाँच आयोग के समक्ष दिनांक २३-५-२०११ को विशेष पूछताछ के दौरान राजू के झूठे आरोपों का पर्दाफाश हो गया और वह लज्जित होते हुए हँसी और लानत का पात्र बन गया। राजू ने सच्चाई को स्वीकारते हुए कहा : ''मैंने वर्ष २००२ में ही आश्रम छोड़ दिया था। मैंने जब से आश्रम छोड़ा है उसके बाद से मैंने अहमदाबाद अथवा अन्य किसी भी दूसरे आश्रम की आज तक मुलाकात नहीं ली है। मैंने जब से आश्रम छोड़ा है, तब से आज तक मुझे आश्रम की प्रवृत्ति के विषय में कोई व्यक्तिगत जानकारी नहीं है। सन् २००२ में जब मैंने आश्रम छोड़ा उस समय मैं निवाई गौशाला में था।''

उल्लेखनीय है कि जयपुर आश्रम का निर्माणकार्य सन् २००५ में प्रारम्भ हुआ था। आश्रम के पवित्र सिद्धांतों के विरुद्ध कार्य करने के कारण राजू को २००२ में आश्रम से निकाल दिया गया था। इसके बाद से फिर उसका किसी भी आश्रम में कभी भी आना-जाना नहीं होता है और ऐसा व्यक्ति अगर सन् २००४ की किसी आश्रम में हुई घटना बताये तो वह महज कपोलकल्पना ही है। अतः झूठा बयान देने के कारण वह हँसी व धिक्कार का पात्र बन गया है।

न्यायाधीश श्री डी.के. त्रिवेदी ने राजू द्वारा कही गयीं मनगढ़ंत कहानियों और झूठे आरोपों को ध्यान में न लेने के आदेश दिये।

'संदेश' अखबार ने राजू की झूठी कहानी में मिर्च-मसाला डालकर उसे मुखपृष्ठ पर प्रकाशित करके समाज को गुमराह करने का कलुषित प्रयास किया था। पर कहते हैं कि 'साँच को आँच नहीं...' राजू और संदेश अखबार हजारों-लाखों लोगों के धिक्कार के पात्र बन रहे हैं।

राजू ने जब अपने साथी अमृत प्रजापति के बुर्केवाले षड्यंत्र को विफल होते देखा तो इसके बाद उसने सन् २००९ में उपरोक्त साजिश को अंजाम दिया। **समझदार सज्जन लोगों का कहना है कि न्यायपालिका और समाज को गुमराह करनेवाले मलिन, नीच मनोवृत्तिवाले ऐसे लोगों के दिमाग का इलाज कराने के लिए उनको मानसिक चिकित्सालय (पागलखाने) में भर्ती कराने की जरूरत है।**

राजू ने स्वीकार किया : ''दीपेश, अभिषेक की घटना का तांत्रिक विधि से कोई संबंध नहीं है। मैं इस बात से भी सहमत हूँ कि औघड़ सुखाराम प्रकरण का भी दीपेश, अभिषेक की घटना से कोई संबंध नहीं है।''

राजू ने स्वीकार करते हुए कहा कि ''मैंने औघड़ तांत्रिक सुखाराम के अहमदाबाद आने पर उसके लिए रहने की तथा **अन्य व्यवस्थाएँ** की थीं। मैं उसे बस स्टैण्ड से मेरी गाड़ी में बैठाकर होटल ले गया था। मैं औघड़ सुखाराम को मेरी गाड़ी में होटल से संदेश प्रेस तक लाता, ले जाता था। मैंने उसका होटल में रहने का खर्च २५०० रुपये भी भरे थे।''

ऊपर औघड़ सुखाराम के लिए जो **अन्य**

व्यवस्थाओं की बात राजू द्वारा कही गयी है, उसके संदर्भ में यहाँ उल्लेखनीय है कि स्टिंग ऑपरेशन की सी.डी. में राजू ने स्वीकार किया है कि उसने ४० हजार रुपये, शराब की बोतलें एवं कुकर्म के लिए बाजारू लड़कियाँ देकर ठग सुखाराम को बापूजी पर मनगढ़ंत आरोप लगाने के लिए खरीदा था।

जाँच आयोग के समक्ष राजू को दिल्ली के एक होटल में उस पर किये गये स्टिंग ऑपरेशन की विडियो सी.डी. दिखायी गयी। उस धूर्त राजू को बाध्य होकर स्वीकार करना पड़ा, राजू ने कहा कि ''सी.डी. देखकर मैं कहता हूँ कि यह मेरा ही फोटो है और मैं ही होटल के कमरे में दिखाई दे रहा हूँ। जो बातचीत की आवाज सुनाई दे रही है और मैं जो कुछ इसमें बोल रहा हूँ, वह मेरी ही आवाज है। मैं इस बात के साथ सहमत हूँ कि इस स्टिंग ऑपरेशन की सी.डी. के संबंध में मैंने पुलिस में कोई शिकायत नहीं की है **क्योंकि मुझे उसकी कोई जरूरत महसूस नहीं हुई।**''

राजू के उपरोक्त बयान से स्पष्ट होता है कि स्टिंग ऑपरेशन में उसने पूज्य बापूजी के विरुद्ध षड्यंत्र की जो बातें उगलीं और जो स्टिंग में रिकॉर्ड हुई हैं - साजिश की वे बातें सत्य हैं।

राजू ने सन् २००९ में पूज्य बापूजी के विरुद्ध झूठे बयान दिये। तत्पश्चात् सम्भवतः उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ती ही जा रही है। दिनांक २३-५-२०११ को विशेष पूछताछ के दौरान राजू आवेश और क्रोध का प्रदर्शन करता था। इसके साथ ही प्रश्नों के उत्तर देते समय उसके चेहरे पर घबराहट तथा बेचैनी स्पष्ट दिखाई दे रही थी। झूठ से अपने ही झूठे बयान में उसका झूठापन बेनकाब होता गया और वह हँसी और धिक्कार का पात्र होता गया।

समन्स भेजे जाने के बाद भी बिना किसी ठोस कारण के दो बार जाँच आयोग के समक्ष उपस्थित न होने पर आयोग ने उसे फटकार भी लगायी।

खुद की पोल खुलते देखकर कुटिल राजू ने आखिर स्मृतिभ्रंश का नाटक करना चाहा। अलग-अलग चालीस प्रश्नों के जवाब में उसने हर बार एक ही उत्तर दिया : ''मुझे याद नहीं, मुझे याद नहीं...'' पर यह चाल भी विफल होते देख हड़बड़ाये राजू ने नाटकबाजी का एक नया ही विश्व-कीर्तिमान स्थापित किया। उसने कहा : ''साहब ! मुझे वर्ष २००९ से आज २०११ के बीच की कोई बात याद नहीं है... !!!'' राजू ने दूसरे अनेकों प्रश्नों के परस्पर विरोधाभासी उत्तर दिये। अपने को चालाक माननेवाला राजू इससे और भी फँसता चला गया और उसके झूठे आरोप, नीच मुरादें ध्वस्त होतीं गयीं। आखिर सच सामने आ ही गया।

सच्चे, सरल तथा निर्दोष पुरुष पर मनगढ़ंत आरोप लगानेवाले लोग मुँह की खाते आये हैं। ...और यदि वह निर्दोष पुरुष पवित्र लोकसंत-महापुरुष हों तो उन पर झूठे आरोप लगानेवालों का तो जीवन ही तबाह हो जाता है। ऐसे निंदक खुद तो बरबाद हो ही जाते हैं, साथ ही अपने संगी-साथियों को भी पतन की गहरी खाई में धकेल देते हैं। उनकी बातों में आनेवाले अश्रद्धा और अशांति के शिकार हो जाते हैं। अतः सार्थक हो गयी, साकार हो गयी संत कबीरजी की वाणी :

कबीरा निन्दक ना मिलो, पापी मिलो हजार।
एक निन्दक के माथे पर, लाख पापिन को भार॥

अब राजू व संदेश अखबार की मलिन मुरादों व झूठे आरोपों की पोल-पट्टी सब जान गये हैं।

- आर. सी. मिश्र ❑

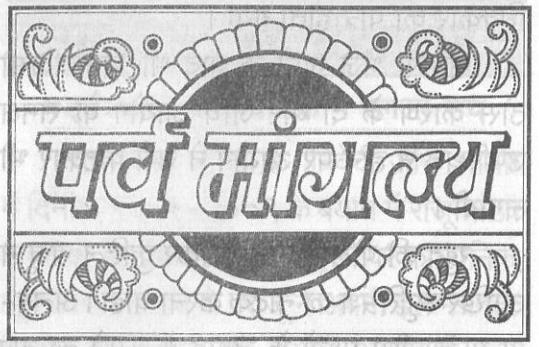

गुरु संकल्प को साकार करनेवाली : श्रावणी पूर्णिमा

- पूज्य बापूजी

(श्रावणी पूर्णिमा : १३ अगस्त)

श्रावणी पूर्णिमा को राखी पूर्णिमा कहते हैं। अरक्षित चित्त को, अरक्षित जीव को सुरक्षित करने का मार्ग देनेवाली और संकल्प को साकार करानेवाली पूर्णिमा है 'श्रावणी पूर्णिमा'। यह ब्राह्मणों के लिए जनेऊ बदलकर ब्रह्माजी और सूर्यदेव से वर्ष भर आयुष्य बढ़ाने की प्रार्थना करनेवाली पूर्णिमा है। यह पूर्णिमा समुद्री नाविकों के लिए समुद्रदेव की पूजा करके नारियल भेंट करने और अपनी छोटी उँगली से खून की बूँद निकालकर समुद्रदेव को अर्पण करके सुरक्षा की प्रार्थना करनेवाली पूर्णिमा है।

इस श्रावणी पूर्णिमा के दिन सामवेद का गान और तान अर्थात् संगीत का प्राकट्य हुआ था। इस दिन सरस्वती की उपासना करनेवाले रागविद्या में निपुणता का बल पा सकते हैं। इस श्रावणी पूर्णिमा से ऋतु-परिवर्तन होता है। इस कालखण्ड में शरद ऋतु शुरू होती है। शरीर में जो पित्त इकट्ठा हुआ है, वह प्रकुपित होता है।

गुरुपूर्णिमा गुरु संकल्प करानेवाली पूर्णिमा है। यह लघु इन्द्रियों, लघु मन और लघु विकारों में भटकते हुए जीवन में से गुरु सुख-बड़ा सुख, आत्मसुख, गुरुज्ञान-आत्मज्ञान की ओर ले चलती है। लघु ज्ञान से लघु जीवनों से तो यात्रा करते-करते चौरासी लाख जन्मों से यह जीव भटकता आया। तो आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा के बिल्कुल बाद की जो पूर्णिमा है, वह श्रावणी पूर्णिमा है; गुरुपूर्णिमा का संकल्प साकार करने के लिए है रक्षाबंधन पर्व, नारियली पूनम, श्रावणी पूनम। गुरुपूर्णिमा का गुरु संकल्प क्रिया में लाने की यह पूर्णिमा है। उसे व्यवहार में लाने के लिए यह पूर्णिमा प्रेरणा देती है।

अँधेरी रात में श्रवण कुमार नदी से जल लाने गये थे। राजा दशरथ समझे कि मृग आया नदी पर और शब्दभेदी बाण मारा। तो जहाँ से शब्द आ रहा था बाण वहाँ गया और मातृ-पितृभक्त श्रवण की हत्या हो गयी। राजा दशरथ ने उस हत्या के पाप से म्लानचित्त होकर उसके माँ-बाप से क्षमायाचना की और श्रवण का श्रावणी पूनम के निमित्त खूब प्रचार भी किया।

'रक्षाबंधन महोत्सव' यह अति प्राचीन सांस्कृतिक महोत्सव है। बारह वर्ष तक इन्द्र और दैत्यों के बीच युद्ध चला। आपके-हमारे बारह वर्ष, उनके बारह दिन। इन्द्र थक से गये थे और दैत्य हावी हो रहे थे। इन्द्र उस युद्ध से प्राण बचाकर पलायन के कगार पर आ खड़े हुए। इन्द्राणी ने इन्द्र की परेशानी सुनकर गुरु की शरण ली। गुरु बृहस्पति तनिक शांत हो गये उस सत्-चित्-आनंद स्वभाव में, जहाँ ब्रह्माजी शांत होते हैं अथवा जहाँ शांत होकर ब्रह्मज्ञानी महापुरुष सभी प्रश्नों के उत्तर ले आते हैं, सभी समस्याओं का समाधान ले आते हैं। आप भी उस आत्मदेव में शांत होने की कला सीख लो।

गुरुजी ने ध्यान करके इन्द्राणी को कहा : ''अगर तुम अपने पातिव्रत्य-बल का उपयोग करके यह संकल्प कर कि 'मेरे पतिदेव सुरक्षित रहें', इन्द्र के दायें हाथ में एक धागा बाँध दोगी तो इन्द्र हारी बाजी जीत लेंगे।'' गुरु की आज्ञा... ! महर्षि

वसिष्ठजी कहते हैं : ''हे रामजी ! त्रिभुवन में ऐसा कौन है जो संत की आज्ञा का उल्लंघन करके सुखी रह सके ?'' और ऐसा त्रिभुवन में कौन है कि गुरु की आज्ञा पालने के बाद उसके पास दुःख टिक सके। मैंने गुरु की आज्ञा मानी तो मेरे पास किसी भी प्रकार का कोई दुःख भेजकर देखो, नहीं टिकता है। एक-दो नहीं, कितने-कितने आदमियों ने कुप्रचार करके दुःख भेजकर देखा, यहाँ टिकता ही नहीं क्योंकि मैंने गुरु की आज्ञा मान रखी है। आप भी गुरु की आज्ञा मानकर लघु कल्पनाओं से बाहर आइये, लघु शरीर के अहं से बाहर आइये, लघु मान्यताओं से बाहर आइये। इन्द्र विजयी हुए, इन्द्राणी का संकल्प साकार हुआ।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वां अभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

जिस पतले रक्षासूत्र ने महाशक्तिशाली असुरराज बलि को बाँध दिया, उसीसे मैं आपको बाँधती हूँ। आपकी रक्षा हो। यह धागा टूटे नहीं और आपकी रक्षा सुरक्षित रहे। - यही संकल्प बहन भाई को राखी बाँधते समय करे।

शिष्य गुरु को रक्षासूत्र बाँधते समय **'अभिबध्नामि'** के स्थान पर **'रक्षबध्नामि'** कहे।

अमृत-कण

सज्जन व्यक्ति यश दूसरे को देता है, परिश्रम स्वयं उठा लेता है और स्वार्थी आदमी परिश्रम दूसरे के सिर मढ़ता है, यश अपने सिर पर उठाता है। यशोदा अर्थात् जो यश दूसरे को दे। भगवान कृष्ण वसुदेव की तो अंगुली पकड़ते हैं, देवकी से तो मिलते हैं लेकिन माता यशोदा के तो हृदय से लगते हैं। कोई भी घटना घटे, तो कहो 'वाह प्रभु ! तेरी कृपा है। वाह प्रभु !...' जो व्यक्ति यश प्रभु को देता है, प्रभु उसको बार-बार हृदय से लगाते हैं। - पूज्य बापूजी

गणेश चतुर्थी या कलंकी चौथ

गणेश चतुर्थी को 'कलंकी चौथ' भी कहते हैं। इस चतुर्थी का चाँद देखना वर्जित है।

इस वर्ष गणेश चतुर्थी (१ सितम्बर) के दिन चन्द्रास्त रात्रि ९-१८ बजे है। इस समय तक चन्द्रदर्शन निषिद्ध है।

यदि भूल से भी चौथ का चन्द्रमा दिख जाय तो 'श्रीमद् भागवत' के १०वें स्कंध के ५६-५७वें अध्याय में दी गयी 'स्यमंतक मणि की चोरी' की कथा का आदरपूर्वक श्रवण करना चाहिए। भाद्रपद शुक्ल तृतीया या पंचमी के चन्द्रमा का दर्शन करना चाहिए, इससे चौथ को दर्शन हो गये हों तो उसका ज्यादा खतरा नहीं होगा।

अनिच्छा से चन्द्रदर्शन हो जाय तो...

निम्न मंत्र से पवित्र किया हुआ जल पीना चाहिए। मंत्र का २१, ५४ या १०८ बार जप करें। मंत्र इस प्रकार है :

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः ।
सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः ॥

'सुंदर, सलोने कुमार ! इस मणि के लिए सिंह ने प्रसेन को मारा है और जाम्बवान ने उस सिंह का संहार किया है, अतः तुम रोओ मत। अब इस स्यमंतक मणि पर तुम्हारा ही अधिकार है।' **(ब्रह्मवैवर्त पुराण, अध्याय : ७८)**

चौथ के चन्द्रदर्शन से कलंक लगता है। इस मंत्र-प्रयोग अथवा उपरोक्त कथा के वाचन या श्रवण से उसका प्रभाव कम हो जाता है। ❑

अंक २२२ की पहेली के उत्तर :
(१) दादूजी (२) संत रज्जबजी (३) कबीरजी (४) सुंदरदासजी (५) तुलसीदास (६) संत प्रीतमजी (७) चरणदासजी

अंक २२३ की पहेली के उत्तर :
(१) दधीचि ऋषि (२) छत्रपति शिवाजी (३) महाराणा प्रताप (४) ब्रह्मज्ञान

अजा एकादशी

(२५ अगस्त)

युधिष्ठिर ने पूछा : जनार्दन ! अब मैं यह सुनना चाहता हूँ कि भाद्रपद (गुजरात-महाराष्ट्र के अनुसार श्रावण) मास के कृष्ण पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है ? कृपया बताइये।

भगवान श्रीकृष्ण बोले : राजन् ! एकचित्त होकर सुनो। भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम 'अजा' है। वह सब पापों का नाश करनेवाली बतायी गयी है। भगवान हृषीकेश का पूजन करके जो इसका व्रत करता है उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

पूर्वकाल में हरिश्चन्द्र नामक एक विख्यात चक्रवर्ती राजा हो गये हैं, जो समस्त भूमण्डल के स्वामी और सत्यप्रतिज्ञ थे। एक समय किसी कर्म का फलभोग प्राप्त होने पर उन्हें राज्य से भ्रष्ट होना पड़ा और अपनी पत्नी और पुत्र को भी बेच देना पड़ा। फिर स्वयं को भी बेच दिया। पुण्यात्मा होते हुए भी उन्हें चाण्डाल की दासता करनी पड़ी। वे मुर्दों का कफन लिया करते थे। इतने पर भी नृपश्रेष्ठ हरिश्चन्द्र सत्य से विचलित नहीं हुए।

इस प्रकार चाण्डाल की दासता करते हुए उनके अनेक वर्ष व्यतीत हो गये। इससे राजा को बड़ी चिंता हुई। वे अत्यंत दुःखी होकर सोचने लगे, 'क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? कैसे मेरा उद्धार होगा ?' इस प्रकार चिंता करते-करते वे शोक के समुद्र में डूब गये।

राजा को शोकातुर जानकर महर्षि गौतम उनके पास आये। श्रेष्ठ ब्राह्मण को अपने पास आया देखकर नृपश्रेष्ठ ने उनके चरणों में प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़ गौतम के सामने खड़े होकर अपना सारा दुःखमय समाचार कह सुनाया।

राजा की बात सुनकर गौतम ने कहा :

'राजन् ! भादों के कृष्ण पक्ष में अत्यंत कल्याणमयी 'अजा' नाम की एकादशी आ रही है, जो पुण्य प्रदान करनेवाली है। उसका व्रत करो। उससे पाप का अंत होगा। उस दिन उपवास करके रात में जागरण करना।'

ऐसा कहकर महर्षि गौतम अंतर्धान हो गये।

मुनि की बात सुनकर राजा हरिश्चन्द्र ने उस उत्तम व्रत का अनुष्ठान किया। उस व्रत के प्रभाव से राजा सारे दुःखों से पार हो गये। उन्हें पत्नी पुनः प्राप्त हुई और मरे हुए पुत्र को जीवन मिल गया। तभी आकाश में दुंदुभियाँ बज उठीं। देवलोक से फूलों की वर्षा होने लगी।

एकादशी के प्रभाव से राजा ने निष्कंटक राज्य प्राप्त किया और अंत में वे पुरजन तथा परिजनों के साथ स्वर्गलोक को प्राप्त हो गये।

राजा युधिष्ठिर ! जो मनुष्य यह व्रत करते हैं, वे सब पापों से मुक्त हो स्वर्गलोक में जाते हैं। इस माहात्म्य को पढ़ने और सुनने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

पद्मा एकादशी

(पद्मा/परिवर्तिनी एकादशी : ८ सितम्बर)

युधिष्ठिर ने पूछा : केशव ! यह बताइये कि भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है, उसका क्या नाम है, उसके देवता कौन हैं और उसकी विधि क्या है ?

भगवान श्रीकृष्ण बोले : राजन् ! इस विषय

में मैं तुम्हें एक आश्चर्यजनक कथा सुनाता हूँ, जो ब्रह्माजी ने महात्मा नारद से कही थी।

नारदजी ने पूछा : चतुर्मुख ! आपको नमस्कार है ! मैं भगवान विष्णु की आराधना के लिए आपके मुख से यह सुनना चाहता हूँ कि भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है ?

ब्रह्माजी ने कहा : मुनिश्रेष्ठ ! तुमने बहुत उत्तम बात पूछी है। क्यों न हो, वैष्णव जो ठहरे ! भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की एकादशी 'पद्मा' के नाम से विख्यात है। उस दिन भगवान हृषीकेश की पूजा होती है। यह उत्तम व्रत अवश्य करने योग्य है। सूर्यवंश में मान्धाता नामक एक चक्रवर्ती, सत्यप्रतिज्ञ और प्रतापी राजर्षि हो गये। वे प्रजा का अपने औरस पुत्रों की भाँति धर्मपूर्वक पालन किया करते थे। उनके राज्य में अकाल नहीं पड़ता था, मानसिक चिंताएँ नहीं सताती थीं और व्याधियों का प्रकोप भी नहीं होता था। उनकी प्रजा निर्भय तथा धन-धान्य से समृद्ध थी। महाराज के कोष में केवल न्यायोपार्जित धन का ही संग्रह था। उनके राज्य में समस्त वर्णों और आश्रमों के लोग अपने-अपने धर्म में लगे रहते थे। मान्धाता के राज्य की भूमि कामधेनु के समान फल देनेवाली थी। उनके राज्यकाल में प्रजा को बहुत सुख प्राप्त होता था।

एक समय किसी कर्म का फलभोग प्राप्त होने पर राज्य में तीन वर्षों तक वर्षा नहीं हुई। इससे उनकी प्रजा भूख से पीड़ित हो नष्ट होने लगी। तब सम्पूर्ण प्रजा ने महाराज के पास आकर इस प्रकार कहा :

नृपश्रेष्ठ ! आपको प्रजा की बात सुननी चाहिए। इस समय अन्न के बिना प्रजा का नाश हो रहा है, अतः ऐसा कोई उपाय कीजिये जिससे हमारे योगक्षेम का निर्वाह हो।

राजा ने कहा : आप लोगों का कथन सत्य है। मैं प्रजा का हित करने के लिए पूर्ण प्रयत्न करूँगा।

ऐसा निश्चय करके राजा मान्धाता इने-गिने व्यक्तियों को साथ ले, विधाता को प्रणाम करके सघन वन की ओर चल दिये। वहाँ जाकर मुख्य-मुख्य मुनियों और तपस्वियों के आश्रमों में गये। एक दिन उन्हें ब्रह्मपुत्र अंगिरा ऋषि के दर्शन हुए। उन पर दृष्टि पड़ते ही राजा हर्ष में भरकर अपने वाहन से नीचे उतरे और दोनों हाथ जोड़कर उन्होंने ऋषि के श्रीचरणों में प्रणाम किया। ऋषि ने भी 'स्वस्ति' कहकर राजा का अभिनंदन किया और उनके राज्य के सातों अंगों की कुशलता पूछी। राजा ने अपनी कुशलता बताकर ऋषि के स्वास्थ्य का समाचार पूछा। ऋषि ने राजा को आसन और अर्घ्य दिया। उन्हें ग्रहण करके जब वे ऋषि के समीप बैठे तो उन्होंने राजा से आगमन का कारण पूछा।

राजा ने कहा : भगवन् ! मैं धर्मानुकूल प्रणाली से प्रजा का पालन कर रहा था। फिर भी मेरे किसी कर्म के फलस्वरूप मेरे राज्य में वर्षा का अभाव हो गया है। आप मुझे वह उपाय कहिये जिससे राज्य में फिर से वर्षा हो।

ऋषि बोले : राजन् ! एकादशी का व्रत करो। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में जो 'पद्मा' नाम से विख्यात एकादशी होती है, उसके व्रत के प्रभाव से निश्चय ही उत्तम वृष्टि होगी। नरेश ! तुम अपनी प्रजा और परिजनों के साथ इसका व्रत करो।

ऋषि के ये वचन सुनकर राजा अपने घर लौट आये। उन्होंने समस्त प्रजा के साथ भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की 'पद्मा एकादशी' का व्रत किया। इस प्रकार व्रत करने पर मेघ पानी बरसाने लगे। पृथ्वी जल से आप्लावित हो गयी और हरी-भरी खेती से सुशोभित होने लगी। उस व्रत के प्रभाव से सब लोग सुखी हो गये।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : राजन् ! इस

कारण इस उत्तम व्रत का अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए । 'पद्मा एकादशी' के दिन जल से भरा हुआ घड़ा वस्त्र से ढककर दही और चावल के साथ ब्राह्मण को दान देना चाहिए, साथ ही छाता तथा जूता भी देना चाहिए । दान करते समय निम्नांकित मंत्र का उच्चारण करना चाहिए :

नमो नमस्ते गोविन्द बुधश्रवणसंज्ञक ॥
अघौघसंक्षयं कृत्वा सर्वसौख्यप्रदो भव ।
भुक्तिमुक्तिप्रदश्चैव लोकानां सुखदायकः ॥

'बुधवार और श्रवण नक्षत्र के योग से युक्त द्वादशी के दिन बुद्धश्रवण नाम धारण करनेवाले भगवान गोविंद ! आपको नमस्कार है... नमस्कार है ! मेरी पापराशि का नाश करके आप मुझे सब प्रकार के सुख प्रदान करें । आप पुण्यात्मा जनों को भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाले तथा सुखदायक हैं ।'

(पद्म पुराण, उ.खण्ड : ५९.३८, ३९)

राजन् ! इस एकादशी के माहात्म्य को पढ़ने और सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है । ❑

व्रत, पर्व और त्यौहार

२१ अगस्त : श्रीकृष्ण जयंती (स्मार्त) (उपवास), रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से दोपहर २-२५ तक)

२३ अगस्त : शरद ऋतु प्रारम्भ

२९ अगस्त : सोमवती अमावस्या (सूर्योदय से सुबह ८-३५ तक)

१ सितम्बर : विनायक-कलंकी-गणेश चतुर्थी, चन्द्रदर्शन निषिद्ध (चन्द्रास्त : रात्रि ९-१८)

४ सितम्बर : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से दोपहर ११-५३ तक)

१२ सितम्बर : श्राद्ध पक्षारम्भ

२१ सितम्बर : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से सुबह ७-३१ तक)

संत वाणी

लच्छ कोष जो गुरु बसै, दीजै सुरति पठाय ।
शब्द तुरी असवार ह्वै, छिन आवै छिन जाय ॥

यदि गुरु लाख कोस पर निवास करते हों तो भी अपना मन उनके चरणों में लगाते रहो । गुरु के सदुपदेशरूपी घोड़े पर सवार होकर अपने मन से गुरुदेव के पास क्षण-क्षण आते-जाते रहना चाहिए ।

भाव : गुरु के उपदेश में अपना मन रखोगे तो गुरु का स्मरण स्वाभाविक होता रहेगा ।

– संत कबीरजी

दादू मन फकीर ऐसैं भया, सतगुर के परसाद ।
जहाँ का था लागा तहाँ, छूटे बाद-बिबाद ॥
ना घरि रह्या न बनि गया, ना कुछ किया कलेस ।
दादू मन ही मन मिल्या, सतगुर के उपदेश ॥

– संत दादू दयालजी

दादू दीनदयाल गुरु, सो मेरे सिरमौर ।
जन रज्जब उनकी दया, पाई निहचल ठौर ॥
रज्जब सिख, दादू गुरु, दीया दीरघ ग्यान ।
तन मन आतम ब्रह्म का, समझ्या सब अस्थान ॥

– संत रज्जबजी

वेद प्रगट ईश्वर वचन, ता महिं फेर न, सार ।
भेद लहैं[1] सद्गुरु मिलै, तब कछु करै विचार ॥
सद्गुरु की महिमा कही, मति अपनी उनमान[2] ।
सुन्दर अमित अनंत गुन, को करि सकै बखान ॥
संत समागम कीजिये, तजिये और उपाइ ।
सुन्दर बहुते उद्धरे, सतसंगति मैं आइ ॥

– संत सुन्दरदासजी

सतगुरु शब्दी तीर है, तन मन कीयो छेद ।
बेदरदी समझै नहीं, बिरही पावै भेद ॥
बचन लगा गुरु ज्ञान का, रूखे लागे भोग ।
इन्द्रकि पदवी लौं उन्हें, चरनदास सब रोग ॥

– संत चरनदासजी

१. भेद लहैं – रहस्य प्राप्त कर लेने पर
२. मति अपनी उनमान – अपनी मति से अनुमान करके

अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करना जन्मसिद्ध अधिकार है !

(राष्ट्रभाषा-दिवस : १४ सितम्बर)

लॉर्ड मैकाले ने कहा था : 'मैं यहाँ की शिक्षा-पद्धति में ऐसे कुछ संस्कार डाल जाता हूँ कि आनेवाले वर्षों में भारतवासी अपनी ही संस्कृति से घृणा करेंगे... मंदिर में जाना पसंद नहीं करेंगे... माता-पिता को प्रणाम करने में तौहीन महसूस करेंगे... वे शरीर से तो भारतीय होंगे लेकिन दिलोदिमाग से हमारे ही गुलाम होंगे...'

हमारी शिक्षा-पद्धति में उसके द्वारा डाले गये संस्कारों का प्रभाव आज स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है । आज के विद्यार्थी पढ़-लिख के ग्रेजुएट होकर बेरोजगार हो नौकर बनने के लिए भटकते रहते हैं ।

महात्मा गांधी के शब्दों में : ''करोड़ों लोगों को अंग्रेजी की शिक्षा देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है । मैकाले ने शिक्षा की जो बुनियाद डाली, वह सचमुच गुलामी की बुनियाद थी । यह क्या कम जुल्म की बात है कि अपने देश में अगर मुझे इंसाफ पाना हो तो मुझे अंग्रेजी भाषा का उपयोग करना पड़े ! हिन्दुस्तान को गुलाम बनानेवाले तो हम अंग्रेजी जाननेवाले लोग हैं । प्रजा की हाय अंग्रेजी पर नहीं बल्कि हम लोगों पर पड़ेगी ।''

अंग्रेजी का हमारे जीवन पर कितना दुष्प्रभाव पड़ता है, इस पर गांधीजी ने कहा : ''विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने में जो बोझ दिमाग पर पड़ता है वह असह्य है । यह बोझ केवल हमारे बच्चे ही उठा सकते हैं लेकिन उसकी कीमत उन्हें ही चुकानी पड़ती है । वे दूसरा बोझ उठाने के लायक नहीं रह जाते । इससे हमारे ग्रेजुएट अधिकतर निकम्मे, कमजोर, निरुत्साही, रोगी और कोरे नकलची बन जाते हैं । उनमें खोज की शक्ति, विचार करने की ताकत, साहस, धीरज, बहादुरी, निडरता आदि गुण बहुत ही क्षीण हो जाते हैं । इससे हम नयी योजनाएँ नहीं बना सकते, बनाते हैं तो उन्हें पूरा नहीं कर सकते । कुछ लोग जिनमें उपरोक्त गुण दिखाई देते हैं, अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं ।''

गांधीजी ने आगे कहा कि ''माँ के दूध के साथ जो संस्कार मिलते हैं और जो मीठे शब्द सुनाई देते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो मेल होना चाहिए, वह विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा लेने से टूट जाता है । हम ऐसी शिक्षा के शिकार होकर मातृद्रोह करते हैं ।''

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी मातृभाषा को बड़े सम्मान से देखा और कहा था कि ''अपनी भाषा में शिक्षा पाना जन्मसिद्ध अधिकार है । मातृभाषा में शिक्षा दी जाय या नहीं, इस तरह की कोई बहस होना ही बेकार है ।'' उनकी मान्यता थी कि 'जिस तरह हमने माँ की गोद में जन्म लिया है, उसी तरह मातृभाषा की गोद में जन्म लिया है । ये दोनों माताएँ हमारे लिए सजीव और अपरिहार्य हैं ।'

गांधीजी ने मातृभाषा-प्रेम को व्यक्त करते हुए कहा कि ''मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियाँ क्यों न हों, मैं उससे उसी तरह चिपका रहूँगा जिस तरह अपनी माँ की छाती से । वही मुझे जीवनदायी दूध दे सकती है । मैं अंग्रेजी को उसकी जगह प्यार करता हूँ लेकिन अंग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है जिसकी वह हकदार नहीं है तो मैं उससे सख्त नफरत करूँगा । मैं इसे दूसरी जबान के तौर पर जगह दूँगा लेकिन विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम, स्कूलों में नहीं । वह कुछ लोगों के सीखने की चीज हो सकती है, लाखों-करोड़ों की नहीं । रूस ने बिना अंग्रेजी के विज्ञान में इतनी उन्नति की है । आज अपनी मानसिक गुलामी की

वजह से ही हम यह मानने लगे हैं कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम चल नहीं सकता। मैं इस चीज को नहीं मानता।''

विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा देना मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक रूप से अति आवश्यक है, क्योंकि विद्यालय आने पर बच्चे यदि अपनी भाषा को व्यवहार में आयी हुई देखते हैं तो वे विद्यालय में आत्मीयता का अनुभव करने लगते हैं। साथ ही उन्हें सब कुछ यदि उन्हींकी भाषा में पढ़ाया जाता है तो उनके लिए सारी चीजों को समझना बहुत ही आसान हो जाता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी 'निज भाषा' कहकर मातृभाषा के महत्त्व व प्रेम को अपने निम्नलिखित बहुचर्चित दोहे में व्यक्त किया है :

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥
उन्नति पूरी है तबहिं, जब घर उन्नति होय।
निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय॥

रवीन्द्रनाथजी ने जापान का दृष्टांत देते हुए बताया है कि ''इस देश में जितनी उन्नति हुई है, वह वहाँ की अपनी भाषा जापानी के ही कारण है। जापान ने अपनी भाषा की क्षमता पर भरोसा किया और अंग्रेजी के प्रभुत्व से जापानी भाषा को बचाकर रखा।''

जापानी इसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि वे अमेरिका जाते हैं तो वहाँ भी अपनी मातृभाषा में ही बातें करते हैं। ...और हम भारतवासी ! भारत में रहते हैं फिर भी अपनी हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं में अंग्रेजी के शब्दों की मिलावट कर देते हैं। गुलामी की मानसिकता ने ऐसी गंदी आदत डाल दी है कि उसके बिना रहा नहीं जाता। आजादी मिले ६४ वर्ष से भी अधिक समय हो गया; बाहरी गुलामी की जंजीर तो छूटी लेकिन भीतरी गुलामी, दिमागी गुलामी अभी तक नहीं गयी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने चिंतन-प्रक्रिया से गुजरते हुए जनसामान्य के लिए इस महत्त्वपूर्ण विचार को प्रस्तुत किया कि ''अनावश्यक को जिस परिमाण में हम अत्यावश्यक बना डालेंगे, उसी परिमाण में हमारी शक्ति का अपव्यय होता चला जायेगा। यूरोप के समान हमारे पास सम्बल नहीं है। यूरोपवालों के लिए जो सहज है हमारे लिए वही भारस्वरूप हो जाता है। सुगमता, सरलता और सहजता ही वास्तविक सभ्यता है। अत्यधिक आयोजन की जटिलता एक प्रकार की बर्बरता है।''

अतः अपनी मातृभाषा की गरिमा को पहचानें। अपने बच्चों को अंग्रेजी में शिक्षा दिलाकर उनके विकास को अवरुद्ध न करें। उन्हें मातृभाषा में पढ़ने की स्वतंत्रता देकर उनके चहुमुखी विकास में सहभागी बनें। कोई भी ऐसे माता-पिता नहीं होंगे, जो अपने पुत्र-पुत्रियों की भलाई या उन्नति न चाहते होंगे। चाहते ही हैं, सिर्फ आवश्यकता है तो अपनी विचारधारा बदलने की। ❑

(पृष्ठ ९ से 'जीवन में जगे माधुर्य श्रीकृष्ण का' का शेष)

श्रीकृष्ण की एक ही दिन में १६,१०० शादियाँ हुईं। एक शादी अगर एक दिन में निपटायी जाय तो १६,१०० के लिए ४४ साल से अधिक समय चाहिए। श्रीकृष्ण ने एक दिन में इतनी शादियाँ कैसे कीं ? १६,१०० श्रीकृष्ण बन गये, १६,१०० पुरोहित भी बना दिये।

ऐसा अवतार, ऐसा भगवान वैदिक संस्कृति के सिवाय, हिन्दू धर्म के सिवाय दूसरी जगह हमने सुना नहीं, देखा नहीं, पढ़ा नहीं है। इसलिए भारतीय संस्कृति मानव के माधुर्य को जगानेवाली संस्कृति है। भारतीय संस्कृति मानव की गरिमा बढ़ानेवाली संस्कृति है। उस संस्कृति की जड़ें काटकर कोई अपने मजहब का या अपने धर्म का प्रचार करता है तो मानवता के साथ द्रोह करने की गलती करता है। ❑

शरद ऋतुचर्या

(शरद ऋतु : २३ अगस्त से २२ अक्टूबर)

वर्षा ऋतु के बाद शरद ऋतु आती है । वर्षा ऋतु में प्राकृतिक रूप से संचित पित्तदोष शरद ऋतु में प्रकुपित होता है, जठराग्नि मंद हो जाती है । परिणामस्वरूप बुखार, पेचिश, उलटी, दस्त, मलेरिया आदि रोग होते हैं । अतः इन दिनों में ऐसा आहार एवं औषधि लेनी चाहिए जो पित्त का शमन करे ।

आहार : पित्तदोष के शमन के लिए मीठे, कड़वे एवं कसैले रस का उपयोग विशेष रूप से करना चाहिए । सब्जियों में कुम्हड़ा (पेठा), लौकी, करेला, परवल, तोरई, गिल्की, गोभी, कंकोड़ा, पालक, चौलाई, गाजर, कच्ची ककड़ी; फलों में अनार, आँवला, पके केले, अमरूद (जामफल), मोसम्बी, नींबू, नारियल, ताजे अंजीर, पका पपीता, अंगूर; मक्के का भुट्टा; सूखे मेवों में चारोली, पिस्ता तथा मसालों में जीरा, धनिया, इलायची, हल्दी, सौंफ लिये जा सकते हैं ।

इसके अलावा दूध, घी, मक्खन, मिश्री, नारियल का तेल तथा अरण्डी का तेल बहुत लाभदायी है । तेल की जगह गाय के देशी घी का उपयोग उत्तम है । घी व दूध उत्तम पित्तशामक हैं, अतः इनका उपयोग विशेष रूप से करना चाहिए ।

शरद ऋतु में खीर खाना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है । श्राद्ध के दिनों में १६ दिन तक दूध, चावल एवं खीर का सेवन पित्तशामक है । शरद पूनम की शीतल रात्रि में छत पर चन्द्रमा की किरणों में रखी हुई दूध-चावल की खीर सर्वप्रिय, पित्तशामक, शीतल एवं सात्त्विक आहार है ।

पके केले में घी और इलायची डालकर खाने से लाभ होता है । गन्ने का रस एवं नारियल का पानी खूब फायदेमंद हैं । काली द्राक्ष (मुनक्का), सौंफ एवं धनिया मिलाकर बनाया गया पेय गर्मी का शमन करता है ।

इस ऋतु में पित्तदोष का प्रकोप करनेवाली खट्टी, खारी (नमकीन) एवं तीखी वस्तुओं का त्याग करना चाहिए । भरपेट भोजन, दिन की निद्रा, बर्फ, दही, खट्टी छाछ व तले हुए पदार्थों का सेवन न करें । गुलकंद व मीठे सेब का उपयोग तथा बायें नथुने से श्वास लेकर दायें से छोड़ना - ऐसा एक से पच्चीस बार दिन में दो बार करना गर्मी-शमन में वरदानरूप है ।

बाजरा, उड़द, कुलथी, अरहर (तुअर), चौलाई, मिर्च, लहसुन, अदरक, बैंगन, टमाटर, इमली, हींग, तिल, मूँगफली, सरसों आदि पित्तकारक होने से त्याज्य हैं ।

अगर पित्त-विकार होता हो तो पित्त के शमनार्थ आँवला चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण अथवा त्रिफला चूर्ण लेना चाहिए । आँवला और मिश्री के मिश्रण से बनाया गया आश्रम-निर्मित आँवला चूर्ण शरद ऋतु में अत्यंत लाभदायी है । यह बढ़े हुए पित्त को मल के साथ बाहर निकालकर शीतलता, ताजगी, स्फूर्ति व बल प्रदान करता है । ताजे आँवलों से बनाया गया 'संत च्यवनप्राश' (आश्रम के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध) भी पित्त के शमन तथा रोगप्रतिकारक शक्ति को बढ़ाने के लिए श्रेष्ठ औषधि है ।

ऋतुजन्य विकारों से बचने के लिए अन्य दवाइयों पर खर्च करने की अपेक्षा आँवला, धनिया और सौंफ के समभाग मिश्रण में उतनी ही मिश्री

मिलाकर एक चम्मच चूर्ण भोजन के आधे घंटे बाद पानी के साथ लेना हितकर है।

इस ऋतु में जुलाब लेने से शरीर से पित्तदोष निकल जाता है एवं पित्तजन्य विकारों से रक्षा होती है। जुलाब के लिए हरड़ उत्तम औषधि है। शरद ऋतु में हरड़ में समभाग मिश्री मिलाकर सेवन करना चाहिए।

विहार : इन दिनों में रात्रि-जागरण, रात्रि-भ्रमण अच्छा होता है, इसीलिए नवरात्रियों में रात को कीर्तन-भजन (जागरण) आदि का आयोजन किया जाता है। रात्रि-जागरण १२ बजे तक का ही माना जाता है। अधिक जागरण से और सुबह व दोपहर को सोने से त्रिदोष प्रकुपित होते हैं, जिससे स्वास्थ्य बिगड़ता है।

शरद पूनम की रात्रि को जागरण, भ्रमण, मनोरंजन आदि को आयुर्वेद ने उत्तम पित्तनाशक विहार के रूप में स्वीकार किया है। इस रात्रि में ध्यान, भजन, सत्संग, कीर्तन, चन्द्रदर्शन आदि शारीरिक व मानसिक आरोग्यता के लिए अत्यंत लाभदायक हैं।

श्राद्ध के दिनों में एवं नवरात्रि में पितृपूजन हेतु संयमी रहना चाहिए। कड़क ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक के नियमित अध्ययन से ब्रह्मचर्य में मदद मिलेगी।

स्वास्थ्य-रक्षा के कुछ सरल प्रयोग

अतिसार : जामुन के २५-३० कोमल पत्ते पाँच बताशों के साथ पीसकर उसका रस पिलाने से अतिसार तुरंत ठीक हो जाता है।

अश्मरी (पथरी) : २५ ग्राम सहजन की जड़ की छाल को २५० ग्राम पानी में उबालें और छान लें। थोड़ा गर्म रहने पर पिलायें। कैसी भी पथरी क्यों न हो, कट-कटकर निकल जाती है।

आरोग्याम्बु : एक लीटर पानी को इतना उबालें कि २५० ग्राम शेष रह जाय, इसे 'आरोग्याम्बु' कहते हैं। इसे पीने से खाँसी, दमा और कफ के रोग दूर होते हैं। बुखार शीघ्र उतर जाता है। यह भूख लगाता है। खायी हुई वस्तु शीघ्र पच जाती है। बवासीर, पाण्डुरोग, वायुगोला और हाथ-पैरों के शोथ को दूर करता है। इस प्रकार के जल का सदा प्रयोग किया जाय तो रोग उत्पन्न ही नहीं होते।

आलस्य : शरीर में आलस्य हो, उठते-बैठते दर्द होता हो, जोड़ों में दर्द हो तो भोजन कम करें तथा भोजन के पश्चात् अंतिम ग्रास के साथ दो चुटकी अजवायन चबा लें। सारे उपद्रव शांत हो जायेंगे।

जुकाम : सुबह तुलसी के पत्तों को मसलकर उनका रस सूँघने से जुकाम में फायदा होता है। ❑

वर्ग पहेली

नीचे कुछ संतों के नाम दिये गये हैं। दिये गये कोष्ठक में इन संतों के शिष्यों के नाम खोजें।

(१) श्री रामकृष्ण परमहंसजी (२) उद्दालक ऋषि (३) स्वामी नित्यानंदजी (४) रैदास (५) वसिष्ठजी (६) सांदीपनिजी (७) स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज (८) वल्लभाचार्यजी (९) वामदेवजी (१०) चरणदासजी

नी	स	ज	द	च	य	ल	ट	व	ड़	व	सा
या	त	ठ	नू	स	ए	ण	चां	स	बा	न	ज
न	ज	चि	ठ	औ	ह	ब	ती	स	छ	मु	क
द	ध	पू	झ	दा	ख	जो	ढ	र्व	क्ता	स	हं
सो	नं	क	बा	लू	स	ए	बा	नं	पा	मा	य
ता	य	का	वं	जी	ष्ण	प	द	ई	जो	माँ	स
क	णी	रा	वे	कृ	म	जी	बा	झ	स	क	प
स	ऊ	क	श्री	वि	स	रा	सं	क्षा	तु	च	ण
जी	न	रा	दा	दा	मी	ट	शा	के	य	ह	कृ
झ	म	ब	र	ड	ङ	स्वा	त	आ	क्ष	झ	स
ग	न	सू	री	प्र	तु	श्वे	द	की	जी	ग	रा
व्या	प	व	ग	ग	न	ब	भ	ओ	धि	ड	री

भक्तों के अनुभव

बड़दादा की कृपा से ब्लड कैंसर गायब !

मुझे नियमित तेज बुखार, सम्पूर्ण शरीर में दर्द, नींद न आना, खून की कमी जैसी कई बीमारियाँ थीं। मेरा स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बिगड़ रहा था। जाँच करायी तो 'ब्लड कैंसर' निकला। हीमोग्लोबिन घटकर 6.9 gm% के आसपास तथा डब्ल्यू.बी.सी. की संख्या बढ़कर 5,00,000/cu mm हो गयी थी। मैं ठीक से खड़ा भी नहीं हो पाता था।

११ व १२ मार्च २०११ को पूज्य बापूजी का आगमन नागपुर में हुआ। मैं भी सत्संग में गया था। बापूजी कह रहे थे कि ''क्यों फरियाद करते हो ? क्यों परेशान होते हो ? मुझे स्वास्थ्य-लाभ मिले, मुझे यह मिले... सत्संग से सब कुछ मिल जायेगा, परेशान नहीं होना।'' मुझे लगा कि 'हर दिल की व्यथा समझनेवाले मेरे बापूजी मुझे ही कह रहे हैं।' वापस घर लौटा तो डॉक्टरों ने कहा 'कीमो थेरैपी' की आवश्यकता है। मैं रायपुर स्थित बापूजी के आश्रम में गया, बड़ बादशाह की परिक्रमा की। मैं सुबह-शाम तुलसी-रस का सेवन, १० प्राणायाम, गुरुमंत्र का जप व बापूजी द्वारा बताये गये पीड़ानाशक मंत्र की एक माला प्रतिदिन जपने लगा।

२० दिन बाद खून की जाँच करायी तो डब्ल्यू. बी.सी. की संख्या पाँच लाख से घटकर 9,600 / cumm हो गयी थी। इस चमत्कार से आश्चर्यचकित होकर डॉक्टर ने अपने खर्चे से दूसरी लैब में जाँच करवायी तो भी वही रिपोर्ट आयी। डॉक्टर बोल उठे : ''मैंने अपने पूरे कैरियर में ऐसा केस पहली बार देखा कि ब्लड कैंसर का मरीज मात्र २० दिन में ठीक हो गया।'' सर्वसमर्थ पूज्य बापूजी की कृपा से आज मैं मौत के मुँह से बाहर आ गया हूँ। **– भोज कुमार चन्द्राकर**
शिकारी पारा, बालोद, जि. दुर्ग (छत्तीसगढ़)।

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

१९ जून को खिला **फुलेरावासियों** के दिल का फूल... हुई सत्संग की अमृतवर्षा ! यहाँ के लोगों को बिना खर्च के सफलता पाने की कुंजी बताते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : ''आपका प्रसन्न और निर्भयतावाला चेहरा कई समस्याओं का समाधान कर देता है। कई परायों को अपना बना लेता है। निर्भयता, प्रसन्नता और सबकी भलाई के भाव से भरा मन और आँखें आपको जहाँ-तहाँ विजयी बना देती हैं।''

गुरुपूर्णिमा-महोत्सव

पूज्य बापूजी के शिष्यों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष गुरुपूर्णिमा-महोत्सव देश के विभिन्न राज्यों के १२ स्थानों पर मनाया गया। गुरुपूर्णिमा-महोत्सव की प्रथम कड़ी बनने का सौभाग्य पाया चंडीगढ़वालों ने। **२२ जून** को **चंडीगढ़** में गुरुभक्तों का समुंदर उमड़ने लगा और उसमें परमात्मप्रीति का ज्वार आने लगा, जो **२४ जून** तक सतत बढ़ता ही गया।

मनुष्य-जन्म के वास्तविक उद्देश्य की याद दिलाते हुए पूज्य बापूजी ने सबकी आँखों में ज्ञान का अंजन लगाया : ''अपने जीवन में वासनाओं को, ख्वाहिशों को कम करो तो समय बचेगा और समय बच जाय तो उसको जिज्ञासा की पूर्ति में लगाओ। 'मैं कौन हूँ ? दुःख आता है तो कौन दुःखी होता है, कौन सुखी होता है ? सुख और दुःख के बाद कौन रह जाता है ?' इसे जानो तो आपका जीवन सार्थक हो जायेगा।''

२६ व २७ जून को **रायपुर (छ.ग.)** में गुरुज्ञान का प्रसाद बँटा। गुरुदर्शन के लिए छत्तीसगढ़ के भक्तों का विशाल जनसैलाब उमड़ पड़ा।

छत्तीसगढ़ के सत्संगप्रेमी मुख्यमंत्री डॉ. रमणसिंह ने पूज्य बापूजी से खूब अनुनय-विनय कर अपने राज्य के लोगों को आपश्री के सत्संग का लाभ दिलाया। तल्लीन होकर सत्संग-लाभ लेने के पश्चात् अहोभाव से भरे उनके हृदय से ये उद्गार निकले : ''मैं सम्पूर्ण छत्तीसगढ़वासी तथा यहाँ उपस्थित विशाल जनसमुदाय, जो दो दिन से लगातार यहाँ

उपस्थित है और सत्संग-अमृतवर्षा ग्रहण कर रहा है, बापूजी का आशीर्वाद ले रहा है - सबकी ओर से पूज्य बापूजी के चरणों में वंदन करता हूँ । मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपकी कृपा हम सब पर बनी रहे ताकि यहाँ सुख, शांति और समृद्धि बनी रहे । नक्सलवाद, भय, भूख और गरीबी यहाँ से समाप्त हो जायें । इसमें हम लगे हैं और आपका आशीर्वाद हमको पहले भी मिलता रहा है और जीवनभर मिलता रहेगा, इसी कामना के साथ मैं छत्तीसगढ़ आगमन पर आपका स्वागत व अभिनंदन करता हूँ ।''

वि.हि.प. के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष पुण्यात्मा श्री अशोक सिंघलजी ने भी इस अनुपम अवसर पर पूज्य बापूजी के सत्संग-दर्शन का लाभ लिया ।

१ व २ जुलाई को **उज्जैन (म.प्र.)** में दर्शनोत्सव हुआ । कुछ नासमझ लोगों को सावधान करते हुए इन करुणासिंधु ने कहा : ''कुछ लोग बोलते हैं, 'हम महात्माओं को नहीं मानते, महात्माओं में भगवद्बुद्धि करो-हम यह नहीं मानते । भगवान हम पर दया करेगा ।' पर भैया ! महात्मा नहीं होगा तो कोई भगवान का भक्त भी नहीं बनेगा, भगवान का स्वरूप भी नहीं जानेगा । भगवान की सुहृदता, व्यापकता, ज्ञानस्वरूपता, साक्षीपना महात्मा के बिना तुम जानोगे कैसे ?''

३ व ४ जुलाई को झूमी **भोपाल (म.प्र.)** की जनता । बापूजी के आने के पूर्व ही इन्द्रदेव ने वर्षा कर वातावरण खुशनुमा बनाया । जैसे ही बापूजी पधारे, वर्षा बंद हुई । बापूजी के प्रस्थान के बाद मूसलाधार वर्षा हुई ।

गुरु का आदर कितना कल्याणकारी होता है यह बताते हुए बापूजी बोले : ''हम मंत्र का, गुरु का, भगवान का आदर करते हैं तो हम ही आदरणीय हो जाते हैं । मैंने मेरे गुरु का आदर किया तो मेरे गुरु पर मैंने मेहरबानी नहीं की, मैंने अपने पर ही मेहरबानी की । गुरु का आदर करोड़ों गुना होकर मेरे आदर में बदल रहा है । गुरु के प्रति प्रेम करोड़ों गुना होकर मेरे प्रति समाज का प्रेम उभार रहा है । गुरु के प्रति हम जो भी करते हैं, आदर, प्रेम, वफादारी वह अनंत गुना होकर हमारे लिए ही तो होता है ।''

दक्षिण भारत में भी पूज्य बापूजी के सत्संग की बढ़ती माँग व भक्तों की संख्या में लगातार अभिवृद्धि को प्रकट कर वहाँ के भक्तों ने प्रार्थना की तो बापूजी ने अपनी व्यस्तता के बावजूद भी आंध्र प्रदेश व कर्नाटक वालों का आमंत्रण स्वीकार किया । इन राज्यों के लिए गुरुपर्व झोली में आने का यह पहला ही अवसर था ।

५ जुलाई की **शाम हैदराबाद (आं.प्र.)** के नाम रही । यहाँ बापूजी बोले : ''कलियुग में योग, तप, व्रत ये सब ज्यादा नहीं कर सकते किंतु सुमिरन आसानी से कर सकते हैं । सुमिरन करते-करते एक ऐसी ऊँची अवस्था आती है जहाँ बाहर से सुमिरन नहीं होता, अपितु सुमिरन के अर्थ में मन शांत हो जाता है, चुप हो जाता है ।''

कर्नाटक सरकार ने बापूजी को 'राज्य-अतिथि' घोषित कर पूज्यश्री का विशेष सम्मान किया ।

६ व ७ जुलाई को **बैंगलोर (कर्नाटक)** के भक्तों ने गुरुदर्शन-सत्संग का लाभ लिया । दोनों दिन बारिश चलती रही पर यहाँ के भक्तजन अपने प्यारे जोगी के सत्संग-दर्शन में इतने तल्लीन रहे कि श्रेयस् (शाश्वत परमात्मा की प्रीति) अथवा प्रेयस् (नश्वर सांसारिक सुख-सुविधा) के चुनाव की कसौटी में खरे उतर गये । **कर्नाटक सरकार ने बापूजी को 'राज्य-अतिथि' घोषित कर पूज्यश्री का विशेष सम्मान किया ।**

८ जुलाई को पूज्यश्री **आलंदी (पूना, महा.)** में पधारे । यहाँ दो दिन गुरुदर्शनार्थियों का ऐसा ताँता लगा रहा मानो, ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा यहाँ सैकड़ों वर्ष पूर्व बहायी गयी ज्ञानामृतधारा बापूजी की अमृतवाणी के द्वारा सजीवन हो उठी और सजीव प्रसारण द्वारा देश-विदेशों तक फैल रही उस भक्ति-योग-ज्ञान की त्रिवेणी में डुबकी लगाने गुरुभक्तों का कुंभ मेला लगा हो ।

भक्तों की संख्या के आगे व्यवस्था का नन्हापन भाँपकर तुरंत **९ जुलाई (शाम)** को **रायता (मुंबई)** में भी तारीख दे दी गयी, लेकिन वहाँ भी हाल वही-का-वही ! दर्शनार्थियों की कतारें-ही-कतारें... लोग आ रहे थे, जा रहे थे लेकिन पंडाल भरा-का-भरा ! मायानगरी में मायापति परमात्मा का प्रकाश फैलाते हुए बापूजी बोले : ''अपने को सुखी-दुःखी मत मानो । सुख या दुःख एक अवस्था है । 'मैं सुखी हूँ, मैं दुःखी

हूँ' - यह अहंकार है लेकिन मैं सुख-दुःख को जानता हूँ - यह विवेक है, सच्चाई है, ज्ञान है। यह मुक्ति है, ब्रह्मज्ञान है, गुरुपूजन का फल है।''

भारत के पूर्वी क्षेत्रों के साधकों-भक्तों को दर्शन-सत्संग के लिए अधिक यात्रा-खर्च न करना पड़े, इसलिए बापूजी स्वयं प्रदीर्घ यात्रा कर **१० जुलाई** को **कोलकाता (प. बंगाल)** पहुँचे। आसमान को छूती महँगाई के इस जमाने में जहाँ जीवनोपयोगी वस्तुएँ भी पाना कठिन होता जा रहा है, वहीं कैसे करुणानिधान हैं ये लोकसंत बापूजी जो देवों के लिए भी दुर्लभ सत्संग का अमृत जन-जन को घर बैठे सुलभ करा रहे हैं !

संतश्री बोले : ''जिसके पास गुरुमंत्र है, वह तो गुरु से जुड़ा रहता है। गुरु का शरीर कहीं भी हो लेकिन गुरुमंत्र एक सिमकार्ड से अनंत गुना शक्तिशाली है। सिमकार्ड तो एक्सपायर हो जाता है, जड़ है किंतु गुरुमंत्र चेतन है, इसकी महिमा अपरम्पार है और गुरुमंत्र को और भी प्रभावशाली बनाने के लिए गुरुपूनम पर्व है, गुरुपूनम महोत्सव है।''

इसके बाद पूज्यश्री का दिल्ली में दो दिन एकांतवास रहा। **१३ व १४ जुलाई (दोपहर तक)** गुरुदेव ने **द्वारका, दिल्ली** में उमड़ी जनमेदनी को सदैव आनंदित, स्वस्थ, निश्चिंत रहने की कुंजी प्रदान की : ''अपने आनंदस्वभाव का अभ्यास करें क्योंकि आपके चिंतन का अद्भुत प्रभाव है। आप जैसा चिंतन करते हैं, वैसी ही आपके शरीर और मन की स्थिति बनती है। बीमारी शरीर में होती है, दुःख मन में होता है। आप इन सबको जाननेवाले अमर आत्मा हो। ये सब असत् हैं, आप सत् हो। ऐसा ज्ञान पाकर आनंद में रहो, आनंदस्वरूप आत्मा में जागने के लिए तत्पर हो जाओ।''

राजस्थान की जनता की सुविधा हेतु **१४ जुलाई** की **दोपहर** का सत्र **जयपुर** में दिया गया। भीड़ बहुत थी, दर्शन-सत्संग के लिए समय कम था, फिर भी शिष्यों के इन परम सुहृद ने उतने ही समय में सबको छका दिया, कोई कसर बाकी नहीं रखी। साधना में सफलता की सहज कुंजी देते हुए गुरुवर बोले : ''संधिकाल (सूर्योदय, सूर्यास्त तथा दोपहर १२ व रात्रि १२ बजे के आगे-पीछे का समय) मंत्र-जागृति व साधना-सिद्धि का काल होता है। उसका पूरा फायदा उठाना। अपने गुरुदेव से मानसिक संबंध जोड़कर रात को सोओगे तो सपने में गुरुजी वार्तालाप करेंगे, मार्गदर्शन देंगे और सुबह-सुबह गुरु के स्वरूप का, गुरु के तत्त्व का चिंतन करो।''

१४ तारीख की सुबह दिल्ली में, दोपहर जयपुर में तो रात्रि हुई अहमदाबाद में उमड़े गुरुभक्तों के नाम ! हर वर्ष स्थानों में वृद्धि करने पर भी भीड़ सब जगह उतनी-की-उतनी ! **१४ से १७ जुलाई** तक **अहमदाबाद आश्रम** में सत्संग-दर्शन-भजन का सिलसिला चलता रहा। बड़ी संख्या में भक्तों का ताँता सतत लगा रहा। दर्शन-सत्संग के हर सत्र के बाद शिष्यों का एक हुजूम विदाई लेता था तो दूसरा हाजिर होता था। एक के बाद एक जनसैलाब आता रहा-जाता रहा। कई श्रद्धालु शिष्य तो अपने गाँव या शहर से पैदल-यात्रा निकालकर नाचते-गाते, साज बजाते, अपने देशबंधुओं में गुरुज्ञान का अमृत लुटाते हुए गुरुदर्शन हेतु पधारे थे।

गुजरात के तपस्वी साधक शिष्यों की समझ को सूक्ष्म से सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम की ऊँचाई तक पहुँचाते हुए बापूजी बोले : ''शिष्य का मतलब क्या है ? 'मैं अब आपसे शासित होने योग्य हूँ। हम दो हाथ जोड़ते हैं और तीसरा मत्था टेकते हैं। हमारी पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और मन - ये ग्यारह हमको सता रहे थे। अब हम आपके निर्देशानुसार इनको चलायेंगे। हम शिष्य हैं...' सिर झुकाया। अपनी मनमानी नहीं, अपने मन से निर्णय करने से भटक जायेगा। हमारा भला किसमें है, वह गुरुदेव बता दें और उसी रास्ते चलें तो कहाँ से कहाँ पहुँच जायें !''

सभी स्थानों पर पूज्यश्री के शिष्यों द्वारा बनायी गयी छोटी-सी पारदर्शी रेलगाड़ी सभीका आकर्षण-केन्द्र बनी रही। इसने गुरु और शिष्यों को निकट लाने में सेतु का काम किया। जैसा दर्शन पहली पंक्ति में बैठे भक्तों को होता था, वैसा-का-वैसा अब अंतिम पंक्ति में बैठे भक्तों को भी सुलभ हो गया। **दिने दिने नवं नवम्...**

राजस्थान व हरियाणा में सत्संग-वर्षा

राजस्थान में पूज्य बापूजी के सत्संग की ऐसी तो बाढ़ आयी कि मानो, पूरा राजस्थान ही

सत्संगस्थान में बदल गया । **२४ जुलाई** को **नीम का थाना (जि. सीकर)**, **२५ जुलाई** को **चुरू**, **२६** को **सुजानगढ़** तो **२७** को **बीकानेर** में सत्संग सम्पन्न हुआ । **२८ व २९ जुलाई** को **श्रीगंगानगर** के निवासियों को पूज्यश्री के सत्संग-सान्निध्य का लाभ मिला । पूज्यश्री उवाच : ''हर वस्तु में, हर व्यक्ति में, हर देश में, हर काल में जो सत्-चित्-आनंदस्वरूप अधिष्ठान विराजमान है, उस परमेश्वर का एक नाम 'हरि' है । उसका सुमिरन करने से वह पाप, ताप, शोक हर लेता है ।

दवाइयों से रोग नहीं मिटते हैं । अगर दवाइयों से रोग मिट जाते तो आज सब निरोग होते । रोग केवल स्थूल शरीर के नहीं हैं । काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार - ये आंतरिक रोग भी हैं । अजपाजप से, भगवान के नाम से प्राणमय कोष के रोग भी मिटेंगे व बाहर के भी । औषधि थोड़ा-बहुत काम करेगी किंतु सच्ची निरोगता तो भगवत्प्रीति से आयेगी ।''

सत्संग-गंगा का प्रवाह अब हरियाणा की धरती को पावन करने आगे बढ़ा । **२९ जुलाई** की **शाम** रही **सिरसा** के नाम । पूज्यश्री बोले : ''सत्संग से यह पता चलता है कि 'कमाया-खाया, खाया-कमाया, रुपये-पैसे इकट्ठे किये, घर बनाया और छोड़ के मर गये तो हमारे हाथ क्या लगा ?' मनुष्य-जीवन ऐसे मिट जाने के लिए नहीं है । शरीर मिट जाय उसके पहले अमिट आत्मा-परमात्मा का ज्ञान व प्रीति पाने के लिए है ।''

हरियाणा के गृहमंत्री श्री गोपाल कांडा ने पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य का लाभ लिया । उन्होंने कहा : ''पूज्य संतशिरोमणि श्री बापू आशारामजी महाराज आज हमारे बीच चाहे एक दिन के लिए आये, पर सिरसावासियों को इस बात की बहुत-बहुत खुशी है कि आपने अपना एक कीमती दिन हमें दिया। मैं सिरसा नगर की तरफ से आपका बहुत-बहुत स्वागत, बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ । आपका आशीर्वाद सिरसा को मिला, इससे पूरी नगरी धन्य हुई है और मुझे पूरी उम्मीद है कि आप सिरसावालों को आगे भी समय देंगे और अपना आशीर्वाद देंगे ।''

सिरसा के सांसद श्री अशोक तँवर ने भी पुनः-पुनः पधारने की प्रार्थना पूज्यश्री से की : ''परम पूजनीय संतशिरोमणि श्री आशाराम बापूजी ! आप श्रीगंगानगर से दिल्ली की तरफ जा रहे थे तो आज अचानक यह कार्यक्रम बना । आगे हम सब लोग मिलकर आपको अच्छे तरीके से आमंत्रित करेंगे । हम सब आपके दिखाये हुए मार्ग पर चलेंगे और जिन उद्देश्यों को लेकर आप चलते हैं, उनको और भी ज्यादा जितने लोगों तक प्रचारित-प्रसारित कर सकते हैं, हम करेंगे । आप बार-बार सिरसा में आयें ।''

३० जुलाई को **टोहाना** के भक्तों ने पूज्यश्री की हृदयस्पर्शी वाणी का लाभ लिया : ''अपने मन को कहीं फँसने मत दो । न राग में, न द्वेष में, न मित्र में, न शत्रु में । लेते चलो, देते चलो, छोड़ते चलो । प्रकृति की गहराई में, परमात्मा के स्वभाव में और आपके मूल में भी यही है । प्रकृति और परमात्मा के सिवाय तीसरा कुछ भी नहीं है । मूल के अनुरूप चलनेवाला व्यक्ति संसार में मजे से जी लेता है और अमरता को पा लेता है । मूल के खिलाफ चलनेवाला व्यक्ति संसार से हार जाता है, थक जाता है ।''

बापूजी के सत्संग-दर्शन से अभिभूत हरियाणा के कृषि मंत्री श्री परमवीर सिंह ने कहा : ''परम संत श्री आशारामजी बापू ने टोहाना पर कृपा करने के लिए समय निकाला है । उनके प्रति धन्यवाद-ज्ञापन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं । इस दुनिया में ऐसे परम संत बहुत ही कम हैं जो सीधे परमात्मा से जुड़े हों, परमात्मा को पाने का रास्ता दिखायें । आज हमें उन दुर्लभ परम संतों में से एक संत श्री आशारामजी बापू के दर्शन करने और सत्संग सुनने का मौका मिला है । हम सब बहुत भाग्यशाली हैं ।'' ❑

महत्त्वपूर्ण सूचना

आश्रम की गौशालाओं के लिए चंदा नहीं लिया जाता । कोई चंदा लेते हुए दिखें तो ऐसे लोगों से सावधान रहें एवं अहमदाबाद आश्रम में उसकी जानकारी दें । उनको पकड़ के अपने पैसे वापस लोगे तो हमको खुशी होगी । गायों की सेवा करने में आश्रम अपना सौभाग्य मानता है । नारायण के सेवक मूक गायों के नाम चंदा माँगने से बाज आयें । श्योपुर के गजानन और अशोक जाट को चेतावनी दी जाती है कि गायों के नाम लोगों से ठगी नहीं करें ।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव-२०११ की कुछ झलकियाँ

चंडीगढ़

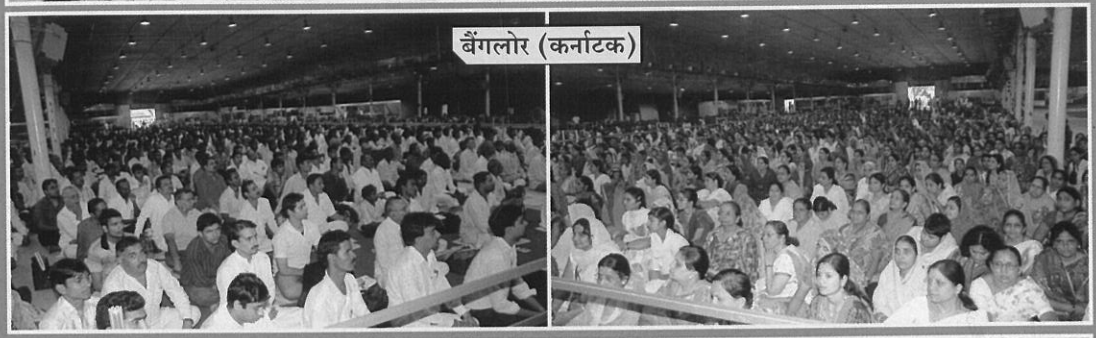
बैंगलोर (कर्नाटक)

हैदराबाद (आं.प्र.)

भोपाल (म.प्र.)

पुणे (महा.)

जयपुर (राज.)

उज्जैन (म.प्र.)

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd. valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2011)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
'D' No. MR/TECH/47.4/2011

Posting at PSO Ahmedabad between 14 to 17th of every month. ❀ Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. ❀ Posting at MB Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.

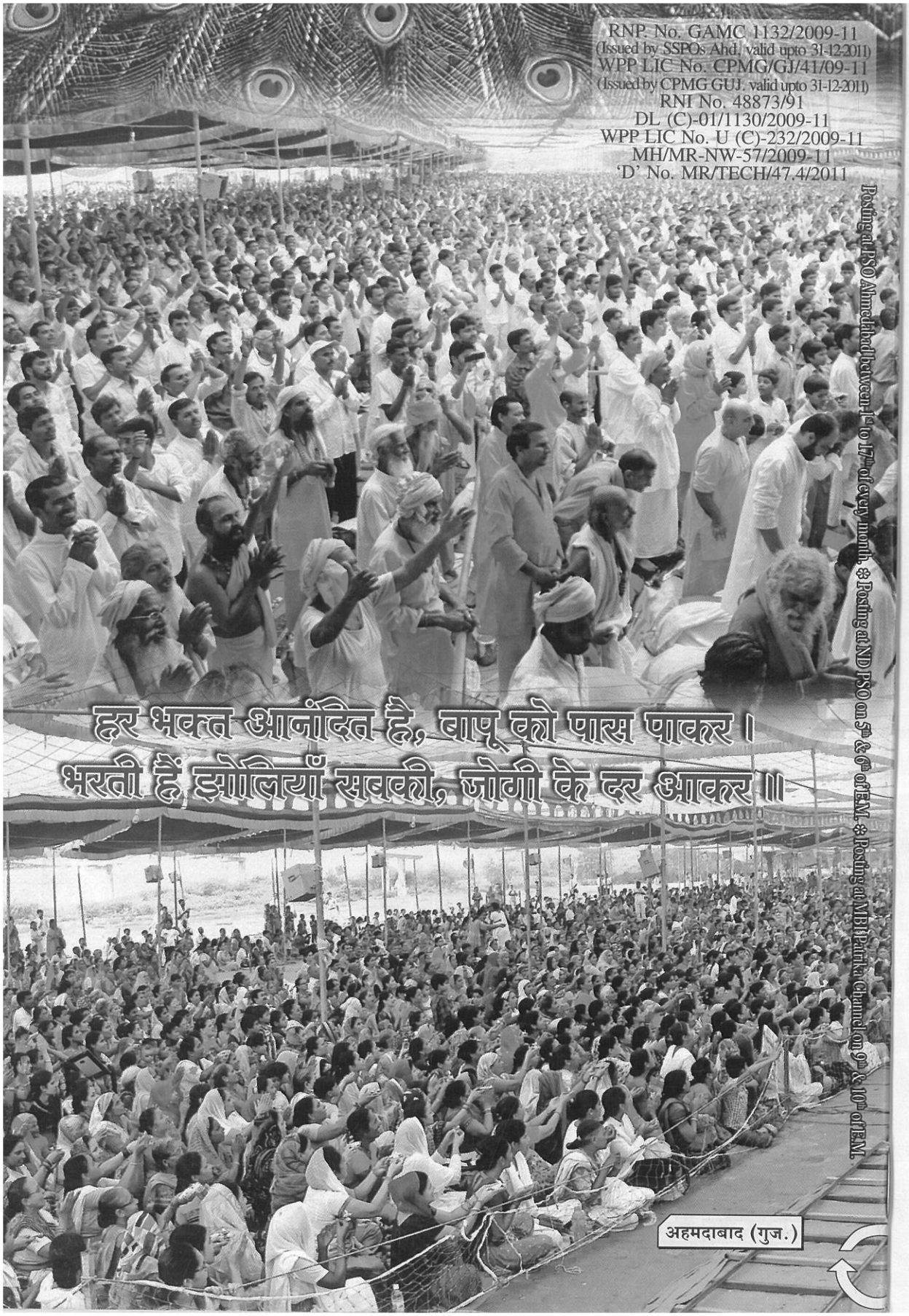

हर भक्त आनंदित है, बापू को पास पाकर।
भरती हैं झोलियाँ सबकी, जोगी के दर आकर॥

अहमदाबाद (गुज.)